कृषि मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत एकमात्र कृषि साप्ताहिक

डाक प्रेषण का दिन – सोमवार, मंगलवार
Registered Postal Regn. No.MP/Bhopal/143/2025-27 RNI No. 1832/57

कृषक जगत

राष्ट्रीय कृषि अखबार

भोपाल-जयपुर-रायपुर

ISSN -0970-8650

संस्थापित 1946 भोपाल, प्रकाशन - सोमवार, 24 नवम्बर 2025 वर्ष-80 अंक- 13 मूल्य-रु. 12/- कुल पृष्ठ-16 www.krishakjagat.org

रबी विशेषांक -2

इस अंक में

- रबी फसल - कुसुम लगाएं
- रबी प्याज की उन्नत खेती
- रबी मौसम की चारा फसल बरसीम

प्रदेश की मंडियों में लगेंगे क्लीनिंग, ग्रेडिंग प्लांट : श्री कंषाना

(विशेष प्रतिनिधि)

भोपाल (कृषक जगत)। मध्य प्रदेश राज्य कृषि विपणन बोर्ड (मंडी बोर्ड) वित्तीय वर्ष 2025-26 में प्रदेश की 20 प्रमुख मंडियों में क्लीनिंग, ग्रेडिंग और पैकेजिंग प्लांट्स स्थापित करने जा रहा है। इन प्लांट्स की स्थापना से किसानों को उनकी कृषि उपज, जैसे कि गेहूं, सोयाबीन, धान, चना, मक्का, मूंग आदि को नि:शुल्क क्लीनिंग और ग्रेडिंग कराने की सुविधा मिलेगी। इससे किसानों को उनके उत्पाद का उचित मूल्य मिलेगा और वे बेहतर बाजार में अपनी उपज बेच सकेंगे।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के निर्देशानुसार और कृषि मंत्री एवं मंडी बोर्ड के अध्यक्ष श्री ऐदल सिंह कंषाना के मार्गदर्शन में यह कदम उठाया गया है। इसका उद्देश्य प्रदेश की मंडियों को सुविधायुक्त और हाईटेक बनाना है, जिससे किसानों की आय को दोगुना किया जा सके। इसके तहत, प्रदेश की 20 मंडियों में 5 टन प्रति घंटा (TPH) और 10 टन प्रति घंटा (TPH) क्षमता वाले क्लीनिंग, ग्रेडिंग और पैकेजिंग यूनिट्स स्थापित की जाएंगी। टेंडर भी जारी किए जा चुके हैं और यह कार्य इसी वित्तीय वर्ष में पूरा किया जाएगा।

भावांतर भुगतान का लाभ

कृषि मंत्री श्री ऐदल सिंह कंषाना ने बताया कि किसानों को भावांतर भुगतान योजना का लाभ भी मिल रहा है, जिसके तहत सोयाबीन उत्पादकों को समर्थन मूल्य से अधिक राशि की प्रतिपूर्ति की जाती है। इस योजना के तहत, किसानों की खरीफ 2025 में उत्पादित सोयाबीन की उपज मंडी में नीलामी के माध्यम से बिक्री हो रही है, और यदि विक्रय मूल्य न्यूनतम समर्थन मूल्य से कम होता है, तो उस अंतर की राशि को मध्य प्रदेश सरकार द्वारा किसानों को दी जाएगी। श्री कंषाना ने बताया कि भारत सरकार की प्रधानमंत्री अन्नदाता आय संरक्षण अभियान के तहत संचालित प्राईस डिफिसिट स्कीम के तहत इस योजना का कार्यान्वयन हो रहा है। मंडी बोर्ड ने किसानों को भावांतर की राशि समय पर मिले, इसके लिए अस्थाई ऋण की व्यवस्था भी की है।

किसानों को मिल रहा भावांतर भुगतान का लाभ

प्लांट्स स्थापित करने वाली मंडियाँ

कृषि मंत्री ने बताया कि मध्य प्रदेश की जिन 20 मंडियों में ये प्लांट्स स्थापित किए जा रहे हैं, वे हैं- उज्जैन, देवास, जबलपुर, गुना, बदनावर, पिपरिया, नीमच, सतना, सिवनी, खंडवा, बुरहानपुर, अशोकनगर, गंजबासौदा, इटारसी, हरदा, जावरा, आष्टा, बैरसिया, सीहोर और आगर मंडी। इन प्लांट्स की स्थापना से किसानों को मंडी में उनकी उपज का बेहतर और गुणवत्तापूर्ण मूल्य मिलेगा, साथ ही उत्पादन में गुणवत्ता भी बढ़ेगी।

सोयाबीन के मॉडल रेट में लगातार वृद्धि

कृषि मंत्री ने बताया कि सोयाबीन के मॉडल रेट में लगातार वृद्धि हो रही है। 22 नवंबर 2025 को यह रेट 4285 रुपए प्रति क्विंटल जारी किया गया। इससे पहले, रेट में हर दिन वृद्धि की गई है। 7 नवंबर को यह रेट 4020 रुपए था, और 21 नवंबर तक यह बढ़कर 4271 रुपए प्रति क्विंटल हो गया था। राज्य सरकार की यह गारंटी है कि किसानों को उनके सोयाबीन की उपज का न्यूनतम समर्थन मूल्य 5328 रुपए प्रति क्विंटल मिलेगा। कृषि मंत्री ने इस योजना को किसान हितैषी और उनके कल्याण के लिए बेहद महत्वपूर्ण बताया और कहा कि इसके तहत मंडी बोर्ड पर कोई अतिरिक्त व्यय नहीं होगा, जिससे यह योजना पूरी तरह से किसानों के लिए लाभकारी साबित होगी।

ईगल बीज दमदार, दे भरपूर पैदावार...
ईगल गेहूं बीज
ईगल-1201
EAGLE-1201
ईगल-1204
EAGLE 1204
सुशिका
Sushika
ईगल-1213
EAGLE-1213
ईगल-1214
EAGLE-1214
हर्षिका
Harshika
ईगल सीड्स एण्ड बायोटेक प्रा. लि.
Eagle
Let's grow!

हमारा भरोसा सिर्फ
IFSA®
नयी सोच, नयी खोज...
IFSA
OJASH
IFSA
Hybrid Mustard Seed
IF-1112
IFSA
Improved Moong Seed
BanshiGold
IFSA
Improved Mustard Seed
Rubi
IFSA
IF-552
Ifsa seeds Pvt Ltd.
G-47 (club)3rd Phase Ricco
9509595024
9509595050

कृषि विस्तार कार्यकर्ताओं के लिए संदर्भ ग्रंथ
वर्ष भर कृषि सेवाओं और उत्पादों के प्रचार हेतु सर्वोत्तम माध्यम
50 वर्षों से निरंतर प्रकाशित
नए आकार, नए कलेवर में
(एग्जीक्यूटिव डायरी)
कृषक जगत
डायरी - 2026
बुकिंग प्रारंभ
प्रमुख आकर्षण
• कृषकों के लिए सरकारी योजनाओं की उपयोगी जानकारी।
• प्रमुख फसलों की नई किस्मों के साथ सम्पूर्ण जानकारी।
• कृषि विभाग के महत्वपूर्ण अधिकारियों के नाम, फोन नंबर ।
• कृषकों के लिए सरकारी योजनाओं की उपयोगी जानकारी ।
• कृषि इनपुट से संबंधित नए उत्पादों की जानकारी ।
• बागवानी, पशु चिकित्सा, कृषि यंत्र की संपूर्ण जानकारी ।
• पंचांग, कैलेण्डर, त्यौहारों, लोक मेलों की जानकारी ।
विज्ञापन एवं डायरी खरीदी के लिए संपर्क करें
इंदौर : सचिन बोन्द्रिया : 9826021837
इंदौर कार्या. : 9826024864
भोपाल : अजय बोन्द्रिया : 9826255861
नई दिल्ली : जयपुर : निमिष गंगराड़े : 7387422952
रायपुर : प्रेमप्रकाश सुल्लेरे : 9826255862
ई-मेल : info@krishakjagat.org
हेल्पलाईन : 6262166222
कृषि आदान-यंत्र निर्माताओं, विक्रेताओं, ट्रैक्टर डीलरों की नववर्ष उपहार के लिए पहली पसंद
कृषक जगत के नियमित सदस्यों के लिए उपहार*
अपना उपहार सुनिश्चित पाने के लिये संपर्क करें
* नियम व शर्तें लागू
विशेष - मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ एवं राजस्थान कृषि पर विशेष जानकारी

राज्य के एक करोड़ हेक्टेयर रकबे को सिंचित बनाना हमारा लक्ष्य : डॉ. यादव

हरदा प्रदेश का पहला सिंचित जिला बनने की ओर अग्रसर

भोपाल (कृषक जगत)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि मध्यप्रदेश एक बार फिर इतिहास बनाने जा रहा है। मध्यप्रदेश के एक करोड़ हेक्टेयर कृषि रकबे को सिंचित बनाना हमारा प्राथमिक लक्ष्य है और हम इस दिशा में योजनाबद्ध तरीके से आगे बढ़ रहे हैं। प्रदेश का हरदा जिला जल्द ही शत-प्रतिशत सिंचित जिला बनने की ओर तेजी से अग्रसर है। हरदा जिले में शहीद ईलाप सिंह माइक्रो उद्वहन सिंचाई परियोजना प्रगति पर है। करीब 756.76 करोड़ रुपये की लागत वाली इस परियोजना से हरदा जिले के 39 हजार 976 हेक्टेयर रकबे में सिंचाई की स्थायी सुविधा मिलेगी। बीते 16 महीनों में इसका 42 प्रतिशत से अधिक काम पूरा हो चुका है। इस परियोजना से हरदा जिले की तवा सिंचाई परियोजना के अंतिम छोर (टेल एंड एरिया) तक रबी फसल की सिंचाई के लिए पानी पहुंचेगा। इससे जिले के वे सभी किसान भी लाभान्वित होंगे जो अब तक कमांड एरिया के गांव में कोई योजना न होने के कारण सिंचाई सुविधाओं से वंचित थे। उन्होंने कहा कि इस परियोजना के पूरा होने पर हरदा प्रदेश का पहला शत-प्रतिशत सिंचित जिला बन जाएगा।

डॉ. यादव मंत्रालय में नर्मदा घाटी विकास प्राधिकरण की 268वीं, नर्मदा नियंत्रण मंडल की 85वीं और नर्मदा बेसिन प्रोजेक्ट्स कंपनी लि. के गवर्निंग बोर्ड की 33वीं बैठक की अध्यक्षता करते हुए संबोधित कर रहे थे। बैठक में नर्मदा घाटी प्राधिकरण एवं नर्मदा नियंत्रण मंडल द्वारा प्रस्तावित सभी परियोजना प्रस्तावों एवं उनके उपबंधों का अनुमोदन किया गया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि सिंहस्थ-2028 के लिए उज्जैन में शिप्रा नदी के घाटों, जल संरक्षण संरचनाओं और अन्य श्रेणी के निर्माण कार्य अनिवार्यतः दिसंबर 2027 तक पूर्ण हो जाने चाहिए।

किसानों के सम्मान में सिंहस्थ लैंड पूलिंग निरस्त

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने मुख्यमंत्री निवास पर किसान संघ, भाजपा पदाधिकारी, उज्जैन के जनप्रतिनिधि और जिला प्रशासन उज्जैन के साथ बैठक कर सिंहस्थ के आयोजन को लेकर समग्र रूप से चर्चा की। बैठक में सिंहस्थ का आयोजन दिव्य, भव्य और विश्व स्तरीय करने के लिये हर संभव प्रयास करने पर सहमति बनी, जिसमें साधु-संतों, किसानों के हितों का व्यापक रूप से ध्यान रखा जायेगा। चर्चा के बाद सिंहस्थ लैंड पूलिंग को निरस्त करने का निर्णय लिया गया।

किसान संघ ने स्वागत किया

बैठक में वरिष्ठ विधायक एवं प्रदेश अध्यक्ष श्री हेमंत खंडेलवाल, विधायक श्री अनिल जैन कालूहेड़ा, किसान संघ की ओर से सर्वश्री महेश चौधरी, कमल सिंह आँजना, अतुल माहेश्वरी, लक्ष्मी नारायण पटेल, भरत बैस, रमेश दाँगी, बीजेपी संगठन की ओर से नगर अध्यक्ष श्री संजय अग्रवाल, जिला महामंत्री श्री कमलेश बैरवा, महामंत्री श्री जगदीश पांचाल और श्री आनंद खींची उपस्थित रहे। किसान संघ द्वारा मुख्यमंत्री के निर्णय का स्वागत करते हुये आभार व्यक्त किया।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक **विजय कुमार बोन्द्रिया** द्वारा 14, इंदिरा प्रेस काम्पलेक्स, महाराणा प्रताप नगर, भोपाल से प्रकाशित एवं कृषक जगत 14, इंदिरा प्रेस काम्पलेक्स, भोपाल (मध्य प्रदेश) से मुद्रित, **सम्पादक : सुनील गंगराड़े,** फोन : 0755-4248100, 2554864, फैक्स : 0755-2571449. E-mail-info@krishakjagat.org इस अंक का मूल्य रु. 12/- वार्षिक शुल्क रु. 600/-.भारत के समाचार पत्रों के पंजीयक कार्यालय का पंजीयन क्रमांक 1832/57

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

कृषक जगत

संस्थापक : स्व. माणिकचन्द्र बोन्द्रिया - स्व. सुरेशचन्द्र गंगराड़े

अमृत जगत

सबसे उत्तम विजय प्रेम की है, जो सदैव के लिए विजेताओं का हृदय बांध लेती है। - सम्राट अशोक

रबी बुआई उपरांत फसलों की देखरेख

रबी फसलों की बुआई कार्यक्रम में पिछले वर्ष की तुलना में इस वर्ष गति कुछ कम दिखाई दे रही है, जिसका परिणाम बुआई में देरी हो सकती है। जबकि समय से फसलों की बुआई का अपना अलग महत्व है। कहावत है डाल का चूका बंदर और समय से चूका किसान दोनों की दुर्गति होती है। भूमि में नमी की बढ़ोत्तरी से अंकुरण में इजाफा होगा। अब गेहूं की बुआई पूरी कर लेनी चाहिये ताकि अच्छी नमी का पूरा-पूरा लाभ अर्जित किया जा सके। ध्यान रखें, केवल उन्हीं किस्मों की बुआई की जाये जो असिंचित या अर्धसिंचित अवस्था के लिये बताई गई हैं। असिंचित अवस्था में यदि सिंचित अवस्था की जातियों की बुआई की गई हो तो भविष्य में पौधों में बालियां समय से पहले निकल आयेंगी और दाना कमजोर होगा पूर्व में ऐसे अनेकों उदाहरण सामने आये हैं और बाद में निराकरण नहीं हो पाये हैं। असिंचित अवस्था की गेहूं की जातियों की बुआई कम से कम 4-6 सेमी गहराई पर की जाना चाहिये। तथा दाना आल (नमी) में जा रहा है इस पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिये किसी भी कीमत में बीज के साथ उर्वरक मिश्रण नहीं किया जाये तथा इस वर्ष अधिक से अधिक क्षेत्र में संतुलित उर्वरक उपयोग अवश्य किया जाये चूंकि भूमि में आम वर्षों की तुलना में इस वर्ष नमी पर्याप्त है। जिसका लाभ लेने से अच्छे परिणाम प्राप्त होंगे। बीजोपचार अनिवार्य होना चाहिये तथा अंकुरण उपरांत खाली जगह भरने से लक्षित उत्पादन मिलना संभव होगा। उल्लेखनीय है कि देश में तथा प्रदेश में 60-70 प्रतिशत खेती वर्षा आधारित होती है। यदि क्षेत्र की औसत उत्पादकता बढ़ा दी जाये तो पूरे क्षेत्र की औसत

में फर्क लाया जा सकता है। अलसी का बीज चिकना होता है उसकी उराई अनुभवी मजदूरों से ही कराई जाये। अन्यथा जगह-जगह पौधों के झुक्के मिलेंगे, जिनसे औसत पौध संख्या प्रभावित होगी चना, मटर, मसूर, कुसुम की बुआई भी उचित गहराई पर की जाये तथा विधिवत बीजोपचार भी किया जाये। चने के खेतों से सोयाबीन के स्वयं ऊगे पौधों को निकालना जरूरी है ताकि चने की इल्ली चौड़ी पत्तियों का सुख देखकर अपने अंडों के लिये अड्डा बनाने में विफल हो सकें। साथ ही जगह-जगह टी आकार की खूटियां भी, खरपतवार जो कोमल पौधों के साथ तीव्रता से ऊग कर पोषक तत्वों का बंटवारा करते हैं उनको निकालकर खाद के गड्ढों में डालते रहें। ध्यान रहे सभी फसलों में पर्याप्त पौध संख्या हो ताकि अच्छा उत्पादन मिल सके। सिंचित अवस्था में अब गेहूं की बुआई 2-3 सेमी गहराई पर करें। पूर्ण संतुलित उर्वरक की मात्रा देकर ही करें तथा खरपतवारों को मारने के लिये 30 दिनों के भीतर ही खरपतवारनाशी का उपयोग करें अन्यथा पैसा एवं श्रम दोनों व्यर्थ जायेंगे। पहली सिंचाई किरीट जड़ अवस्था पर बहुत जरूरी है जो कल्लों का औसत बढ़ाती है इस अवस्था में नमी की कमी कदापि नहीं होना चाहिये अतएव 21 दिनों बाद सिंचाई सुनिश्चित करें। वो भी खरपतवार निकालने के बाद पहली निंदाई यदि हाथों से की जाये तो अधिक अच्छा होगा। उर्वरक की टाप ड्रेसिंग खरपतवार को निकालने के बाद और सिंचाई के बाद ही की जाये ताकि उसका पूर्ण लाभ मिल सके। यह बात यूरिया उर्वरक के उपयोग के बारे में जरूरी है। जो आमतौर पर कृषक करते हैं। बुआई उपरांत की इन छोटी-मोटी तकनीकी का अंगीकरण आर्थिक दृष्टि से बहुत उपयोगी और महत्वपूर्ण भी हैं।

सनातन जीवन-दर्शन : प्रकृति और संस्कृति से जुड़ी जीवन पद्धति

• राजेन्द्र सिंह

पंच महाभूतों के योग की प्रकृति ने ही इस सृष्टि को बनाया है। इन पंचमहाभूतों से निर्मित सृष्टि को चलाने वाले का नाम ही भगवान है। भगवान शब्द पंच महाभूतों के प्रथम वर्ण के योग (भ- भूमि, ग- गगन, व- वायु, अ- अग्नि, न- नीर) से बना है। भारतीय जीवन पद्धति में इन्हीं पंचमहाभूतों की पूजा होती रही है। इन्हीं के योग को भगवान माना गया है। इन्हीं भगवान से हमारी जीवन पद्धति के निर्धारण में जीवन जीने की विद्या, व्यवहार, संस्कार व जीवन को चलने वाले योग, जीवन को बनाने वाले पदार्थ, द्रव्य, गैस के योग से प्रकृति और संस्कृति की समृद्धि होती है। इनसे जीवन पद्धति में किसी भी तरह का विस्थापन, बिगाड़ और विनाश नहीं होता; इसे ही सनातन माना जाता है। सनातन का अर्थ होता है- सदैव, नित्य, नूतन निर्माण की प्रक्रिया। सनातन में विश्वास रखने वाले लोग तत्व रूप में कभी मरते नहीं हैं, उनकी आत्मा पुनर्जन्म लेती रहती है। इसलिए पुनर्जन्म में विश्वास रखने वाली उन सभी आत्माओं का मानना है कि यह सृष्टि सदैव चलती रहेगी, इसका कभी आदि या अंत नहीं होगा। यह चरैवेति-चरैवेति आदि-अन्त भारतीय शास्त्रोक्त कथन है। यही कथन भारतीय ज्ञानतंत्र को सदैव समृद्ध करता रहता है।

पंचमहाभूत और 'भगवान' की संकल्पना

यह समृद्धि हमारी प्रकृति में निर्मित संस्कृति के योग से बनी है। इसीलिए जब प्रकृति और संस्कृति का योग ठीक रहता है, तब आर्थिकी और परिस्थितिकी दोनों ही समान रूप से समृद्ध होती रहती हैं। जब तक भारत में प्रकृति और संस्कृति के योग से चलने वाली जीवन पद्धति रही, तब तक भारत दुनिया की 32 प्रतिशत जीडीपी वाला देश था; जब से उस संस्कृति और प्रकृति में दूरियां बढ़त गईं, तब से हमारी आर्थिकी और पारिस्थितिकी दोनों में गिरावट आई है।

प्रकृति-संस्कृति का योग: भारत की मूल जीवन-पद्धति

हमें यदि भारत की सनातनता को समृद्ध करने वाला रास्ता पकड़ना है, तो हमें प्रकृति और संस्कृति के साथ जीवन को आनंदमय बनाते हुए, मोक्ष की तरफ जाना है। यह रास्ता धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चारों कदमों पर आगे जाता है; तभी तो भारत जीवन विद्या के सभी आयामों से चार कदम आगे है। इन चार कदमों को हम बार-बार स्मरण करके, अपनी संस्कृति को समृद्ध

बनाने का रास्ता पकड़ सकते हैं। हमारे चार आश्रमों, चार अवस्थाओं तथा जीवन को समृद्ध बनाकर पूर्ण आनंद के रास्ते को ही भारतीय ज्ञानतंत्र में धर्म कहा गया है। इसी के माध्यम से काम करके हम आनंदपूर्वक जीवन को चलाने के लिए जो भी अर्थ, पदार्थ आदि कुछ भी चाहिए, उसे प्राप्त करके, मोक्ष के रास्ते पर प्रस्थान कर सकते हैं। मोक्ष हेतु हम जीवन को आनंदपूर्वक शुरू करके, अंत तक इस शरीर को नीरोग, आरोग्य रखने के लिए ऐसा ही आचार-विचार, आहार-विहार करें, जिसमें आनंद हो। यह हमें प्रकृति और संस्कृति के योग से ही प्राप्त हो सकता है।

सनातन समृद्धि और भू-सांस्कृतिक मानचित्र का महत्व

प्रकृति में विश्वास, आस्था, श्रद्धा और इष्ट-भाव, यही भारत के लोगों में था; इसीलिए भारतीय लोग दुनिया की आर्थिकी और पारिस्थितिकी में समृद्ध थे। ये हमारी सनातन जीवन पद्धति के नए शब्द है। चूँकि आज हमारी शिक्षा में इन्हीं शब्दों का प्रयोग होता है, इसलिए मैं इन दोनों शब्दों का ही प्रयोग कर रहा हूं; लेकिन भारतीय ज्ञानतंत्र में इनके पर्याय जीवन में समृद्धि, आनंद, संतोष और समाधान शब्द हैं। संतोष और समाधान हमें तभी होता है, जब हमारी आर्थिकी और पारिस्थितिकी दोनों हमारे जीवन को मोक्ष के रास्ते पर जाने में सहायक होती हैं। ये जीवन में मोक्ष प्राप्ति के अवरोधों से हमें बचा लेती हैं।

धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष: जीवन विद्या के चार आधार

प्रकृति व संस्कृति के योग के आधार से ही भारत आरोग्य प्राप्त करता था। आरोग्य के कारण ही हम दुनिया को सिखाने वाले माने जाते थे। दुनिया हमारे इसी आरोग्य के जीवन व्यवहार और संस्कार का सम्मान करती थी। जैसे-जैसे हमारा जीवन इस प्रकृति से कटता गया, वैसे-वैसे हमारी संस्कृति में गिरावट आती गई। फिर हम सिखाने लायक नहीं बचे, बल्कि हम सीखने वाले बन गए। तब से हम शिक्षा द्वारा दुनिया से आधुनिक चिकित्सा पद्धति, सीखने लगे।

हमारी खेती, पशुपालन, उद्योग, जीवन जीने की कला आदि सब कुछ

भारतीय जीवन-दर्शन का मूल प्रकृति और संस्कृति के उस सनातन योग में निहित है, जिसने पंचमहाभूतों से सृष्टि की रचना की और मानव जीवन को आचार-विचार, आरोग्य, संतुलन व समृद्धि का मार्ग दिया। जैसे-जैसे यह योग टूटता गया, आर्थिकी, पारिस्थितिकी और जीवन-मूल्य क्षीण होते गए। पुन: समृद्धि का मार्ग इसी प्रकृति-संस्कृति संतुलन की वापसी में है।

हमारे जीवन के लिए जरूरी है। अपने प्रचीन ज्ञान-तंत्र से हमें जल, नदियों व समुद्र के प्रबंधन का कौशल पुन: प्राप्त होगा। जब हम अपने ज्ञान तंत्र से इसे प्राप्त कर लेंगे, तो हमारा व्यवहार हमारे संस्कार का केवल हिस्सा ही नहीं बनेगा, बल्कि वह हमारे रक्त प्रवाह में शामिल हो जाएगा। वही रक्त-प्रवाह हमें आरोग्य की तरफ लेकर जाएगा।

समकालीन संकट: प्रकृति से दूर जाती संस्कृति

आज हम सभी तरह से बीमार हैं। यह बीमारी तथा हमारे जीवन में हमारा अर्थ, धर्म और इसका लालच हमें आनंद के मार्ग व मोक्ष के द्वार से दूर करता है। मोक्ष के मार्ग से दूर होने वाले जीवन को आधुनिक शिक्षा में तनाव कहते हैं। जब हमारे जीवन में ये तनाव बढ़ते जाते हैं, तो हमारे जीवन का आनंद स्वत: मिटने लगता है। इसी आनंद की प्राप्ति के लिए हमें एक बार फिर अपनी प्रकृति और संस्कृति के योग को देखने की जरूरत है। इस योग को देखकर, समझकर जब हम भारत के पुनर्जनन की रीति-नीति और भू-सांस्कृतिक मानचित्र तैयार करेंगे, तो भारत फिर से अपनी समृद्धि की राह पकड़ लेगा। ये समृद्धि की राह ही सनातन होगी।

अध्यात्म बनाम आधुनिक विज्ञान

भारत जिस अध्यात्म से विज्ञान के रिश्ते को साधता था, वही भारत की प्रकृति और संस्कृति का योग था। प्रकृति व संस्कृति का योग हमें सनातन बनाए रखना चाहता है, लेकिन हमारी भौतिकी, प्रौद्योगिकी और अभियांत्रिकी इस सनातन में विश्वास नहीं रखती। उसका सनातन में कोई विश्वास नहीं है, उसका लक्ष्य तो चीजों को तोड़-मरोड़ कर अन्तत: भौतिक सत्य पर पहुंचना है; जबकि अध्यात्म का लक्ष्य प्रकृति और संस्कृति के योग के सत्य द्वारा मोक्ष तक जाना है। इन दोनों में बड़ा अंतर है और इन दोनों के अंतर की लड़ाई ने भारत को बहुत नुकसान पहुंचाया है। यह भौतिक सुख की लड़ाई हमारे यहां उत्तर पश्चिम के देशों से आई है, जो नियंत्रण, अतिक्रमण, प्रदूषण और शोषण करने वाली जीवन पद्धति का अंग है। हमारे आध्यात्मिक ज्ञान का मूल उद्देश्य पोषण है। वह पोषण अपना, सबका और अपनी प्रकृति और संस्कृति का भी जरूरी है।

पुनर्जीवन का मार्ग प्रकृति-संस्कृति योग की ओर वापसी

एक तरफ अध्यात्म में पोषण है और दूसरी तरफ विज्ञान में शोषण, अतिक्रमण और प्रदूषण हैं। यह शोषण, प्रदूषण, अतिक्रमण करने वाली सोच उत्तर पश्चिम के देशों में है। क्योंकि वहां का जीवन प्रकृति के विरुद्ध लड़ने वाला था, प्रकृति पर नियंत्रण करने वाला था।

अभी विज्ञान में नया शरीर मिलेगा या नहीं मिलेगा, इसकी बात ही नहीं है; जो कुछ है, इसी जीवन में कर लो, बस! यही अन्तिम जीवन है। जबकि प्रकृति संस्कृति योग में हमारा जीवन तो बराबर चलता रहेगा। यह एक चक्र है जीवन का। इसलिए कोई जल्दी नहीं है। जीवन संपोषित करने वाली रीति-नीति और गति बनाए रखना ही हमारी भारतीय जीवन पद्धति थी। अब जीवन पद्धति से यह सब मिटते जा रहे हैं। इसलिए इसको समग्र और समृद्ध बनाने हेतु अपने पुराने जीवन दर्शन को पुनर्जीवित करने की जरूरत है।

(सप्रेस)

रबी फसल - कुसुम लगायें

भूमि का चुनाव एवं तैयारी- अच्छे उत्पादन के लिये कुसुम फसल के लिये मध्यम काली भूमि से लेकर भारी काली भूमि उपयुक्त मानी जाती है। कुसुम की उत्पादन क्षमता का सही लाभ लेने के लिये इसे गहरी काली जमीन में ही बोयें। इस फसल की जड़ें जमीन में गहरी जाती हैं।

फसल चक्र- इस फसल को सूखा वाले क्षेत्र या बारानी खेती में खरीफ मौसम में किन्हीं कारणों से फसलों के खराब होने के बाद आकस्मिक दशा में या खाली खेतों में नमीं का संचय कर सरलता से उगाया जा सकता है।

खरीफ की दलहनी फसलों के बाद द्वितीय फसल के रुप में जैसे सोयाबीन, मूँग, उड़द या मूँगफली के बाद रबी में द्वितीय फसल के रुप में कुसुम को उगाया जा सकता है। खरीफ में मक्का या ज्वार फसल ली हो तो रबी मौसम में कुसुम फसल को सफलता से उगाया जा सकता है।

उन्नत किस्में- एनएआरआई-57, एनएआरआई- 96, आईएसएफ-1, आईएसएफ-764, सीजी कुसुम-1, आईजीकेवी कुसुम, राज विजय सैफ्लावर14-1, राज विजय सैफ्लावर18-1, फुले किरण

बीजोपचार - कुसुम फसल के बीजों को बोनी करने के पूर्व बीजोपचार करना आवश्यक है, जिससे कि फफूंद से लगने वाली बीमारियों न हो। बीजों का उपचार करने हेतु 3 ग्राम थायरम या ब्रासीकाल फफूँदनाशक दवा प्रति एक किलोग्राम स्वस्थ बीज के लिये पर्याप्त है।

बोने का समय - मूँग या उड़द यदि खरीफ मौसम में बोई गई हो तो कुसुम फसल बोने का उपयुक्त समय सितम्बर माह के अंतिम से अक्टूबर माह के प्रथम सप्ताह तक है। यदि खरीफ फसल के रुप में सोयबीन बोई है तो कुसुम फसल बोने का उपयुक्त समय अक्टूबर माह के अंत तक है। बारानी खेती है और खरीफ में कोई भी फसल नहीं लगाई हो तो सितम्बर माह के अंत से अक्टूबर माह के प्रथम सप्ताह तक कुसुम फसल सफलता पूर्वक बो सकते हैं।

बोने की विधि - 8 किलोग्राम कुसुम का बीज प्रति एकड़ के हिसाब से दुफन या फड़क से बोयें। बोते समय कतार से कतार की दूरी 45 से.मी. या डेढ़ फुट रखना आवश्यक है। पौधे से पौधे की दूरी 20 से.मी. या 9 इंच रखें।

खाद एवं उर्वरक की मात्रा एवं देने की विधि

असिंचित अवस्था में नत्रजन 16 किलोग्राम, स्फुर 16 किलोग्राम एवं 8 किलोग्राम पोटाश प्रति एकड़ की दर से दें। सिंचित स्थिति में 24:16:8 किलोग्राम नत्रजन, स्फुर एवं पोटाश प्रति एकड़ पर्याप्त है। हर तीसरे वर्ष में एक बार 8-10 गाड़ी गोबर की पकी हुई खाद प्रति एकड़ भूमि में मिलाना फायदेमंद रहता है। तिलहनी फसल होने की वजह से गंधक की मात्रा 8-10 किलोग्राम प्रति एकड़ देना उचित रहेगा।

उर्वरक की सम्पूर्ण मात्रा असिंचित अवस्था में बोनी के समय ही भूमि में दें। सिंचित स्थिति में नत्रजन की आधी मात्रा, स्फुर एवं पोटाश की पूरी मात्रा बोनी के समय दें और, शेष नत्रजन की आधी मात्रा प्रथम सिंचाई के समय दें।

सिंचाई - यह एक सूखा सहनशील फसल है अतः यदि फसल का बीज एक बार उग आये तो इसे फसल कटने तक सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती। लेकिन जहाँ सिंचाई उपलब्ध हो, वहां, अधिकतम दो सिंचाई कर सकते हैं। प्रथम सिंचाई 50 से 55 दिनों पर (बढ़वार अवस्था) और दूसरी सिंचाई 80 से 85 दिनों पर (शाखायें आने पर) करना उचित होता है।

निंदाई-गुड़ाई - कुसुम फसल में एक बार डोरा अवश्य चलायें तथा एक या दो बार आवश्यकतानुसार हाथ से निंदाई-गुड़ाई करें। निंदाई-गुड़ाई करने से जमीन की ऊपरी सतह की पपड़ी टूट जायेगी। यदि दरारें पड़ रहीं हो तो वह भर जायेंगी और नमी के ह्रास की बचत होगी। निंदाई-गुड़ाई अंकुरण के 15-20 दिनों के बाद करें एवं हाथ से निंदाई करते समय पौधों का विरलन भी हो जायेगा। एक जगह पर एक ही स्वस्थ पौधा रखें।

फसल कटाई - कांटेवाली जाति में काँटों के कारण फसल काटने में थोड़ी कठिनाई जरुर आती है। काँटेवाली फसल में पत्तों पर काँटे होते हैं। तने कांटे रहित होते हैं। बाँये हाथ में दस्ताने पहनकर या हाथ में कपड़ा लपेटकर या तो दो शाखा वाली लकड़ी में पौधों को फंसाकर दराते से आसानी से फसल कटाई कर सकते हैं।

पौध संरक्षण- कीट

माहो : कुसुम फसल में सबसे ज्यादा माहो की समस्या रहती है। यह प्रथम किनारे के पौधों पर दिखता है। यह पत्तियों तथा मुलायम तनों का रस चूसकर नुकसान पहुँचाता है। माहो द्वारा पौधों को नुकसान न हो, इसलिये मिथाइल डेमेटान 25 ई.सी. का 0.05 प्रतिशत या डाईमिथियेट 30 ई.सी. का 0.03 प्रतिशत या ट्राइजोफॉस 40 ई.सी. का 0.04 प्रतिशत घोल बनाकर छिड़काव करें। आवश्यकता पड़ने पर 15 दिन बाद दुबारा छिड़काव करें।

फल छेदक इल्ली : पौधों में जब फूल आना शुरु होते हैं तब इसका प्रकोप देखा जाता है। इसकी इल्लियाँ कलियों के अंदर रहकर फूल के प्रमुख भागों को नष्ट कर देती हैं। इसकी रोकथाम के लिये क्लोरोपायरीफास 20 ई.सी. का 0.04 प्रतिशत या डेल्टामेथ्रिन का 0.01 प्रतिशत घोल बनाकर छिड़के।

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

रबी प्याज की उन्नत खेती

● धर्मेन्द्र सिंह यशोना
● मनोज कुमार तरवरिया
● सुभाष मंडलोई
भाकृअनुप–भारतीय मृदा विज्ञान संस्थान, नबीबाग, भोपाल

मध्यप्रदेश के मालवा अंचल क्षेत्र में कृषकों के पास पर्याप्त कृषि योग्य भूमि एवं संसाधन हैं। यहां अधिकांश कृषक सीमांत कृषक की श्रेणी में आते हैं अर्धशुष्क जलवायु के साथ मध्यम काली मृदा और सिंचाई का पानी रबी मौसम की खेती करने के लिए कुछ क्षेत्रों को छोड़कर पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है। इस क्षेत्र में किसानों के पास रबी में प्याज उत्पादन के लिए पर्याप्त मात्रा में संसाधन एवं तकनीक उपलब्ध है। इससे किसान को अच्छी कीमत पर बिकने वाली प्याज उत्पादन बहुत ज्यादा होती है। रबी में प्याज की फसल सोयाबीन की फसल कटाई के बाद ली जाती है और सोयाबीन फसल के द्वारा मृदा से सल्फर की अधिक मात्रा का दोहन करने के कारण प्याज के उत्पादन पर विपरीत प्रभाव पड़ता है क्योंकि प्याज की फसल को भी सल्फर तत्व की अधिक मात्रा की आवश्यकता है। प्याज में सल्फर की वजह से उसकी गुणवत्ता युक्त कंद का उत्पादन होता है तथा प्याज की भंडारण क्षमता भी बढ़ जाती है। किसान को प्याज की नई व अच्छी प्रजातियों के बारे में जानकारी न होने की वजह से अच्छी गुणवत्तायुक्त उत्पादन नहीं ले पाते हैं। लेकिन अब खेती की नई जानकारी एवं तकनीक का उपयोग कर प्याज का अच्छा उत्पादन लिया जा सकता है।

रबी प्याज उत्पादन की तकनीकी

प्याज की फसल पर तापमान, मृदा का प्रकार, खेत ढ़लान, रोपण का समय, बीज की गुणवत्ता इत्यादि कारकों का प्रभाव प्याज की अच्छी पैदावार एवं गुणवत्ता पर सबसे अधिक पड़ता है। प्याज पौधों की सर्वोत्तम वृद्धि के लिए तापमान 20-25 सेल्सियस तथा हवा में आर्द्रता 70 प्रतिशत तक कंद के विकास हेतु अनुकूल वातावरण माना जाता है। प्याज की अच्छी बढ़वार के लिए वातावरण का तापमान 25 सेल्सियस कम एवं कंद बनने व बड़े आकार लेने के समय इससे अधिक तापमान प्याज के उत्पादन के लिए उपयुक्त होता है। वानस्पतिक वृद्धि के समय उच्च तापमान एवं वर्षा के कारण वातावरण में अधिक आर्द्रता होने से बैंगनी धब्बा एवं झुलसा रोग का प्रकोप बढ़ जाता हैं जिससे कंद अच्छे नहीं बनते जिसका सीधा प्रभाव कंद के विकास व उत्पादन पर होता है, कंद के विकास के समय अधिक दिनों तक तापमान गिरावट होने से फूल के डंठल निकलने लगते हैं। वहीं अचानक तापमान बढ़ने से गांठें पूरी तरह विकसित हुए बिना परिपक्व हो जाती हैं। इसलिए रबी मौसम में प्याज की रोपाई मध्य दिसंबर से जनवरी प्रथम सप्ताह तक कर देने से प्याज की अच्छी बढ़वार व उत्पादन के लिए जनवरी से मार्च तक का वातावरण उपयुक्त होता है

प्याज की किस्म का चुनाव

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की बागवानी अनुसंधान संस्थाओं, राष्ट्रीय बीज निगम एवं कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की गई प्याज की उन्नत प्रजाति का उपयोग कर अधिक उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं। जो कि किसान को भी आर्थिक रूप से लाभकारी होती हैं। अधिक उत्पादन देने वाली प्याज की प्रजातियां जैसे पूसा रत्नार, पूसा माधवी, एग्रीफाउंड डार्क रेड, लाईन-883, भीमा डार्क रेड, भीमा किरण, भीमा शक्ती, भीमा श्वेता, भीमा सुपर, भीमा रेड, भीमा राज, फुले स्वर्णा, फुले सामर्थ्य, अर्का कल्याण, एन-53 इत्यादि को अपने प्रक्षेत्र पर लगाकर अच्छा उत्पादन ले सकते हैं।

बुआई का समय तथा बीज की मात्रा

रबी मौसम में प्याज उत्पादन के लिए बीज की बुआई अक्टूबर माह में मानसून समाप्ति के बाद कर 45-60 दिन कि पौध का रोपण नवंबर-दिसंबर में तथा खुदाई मार्च-अप्रैल तक करते हैं। खरीफ (स्थानीय भाषा में नाशिक प्याज) के लिए बुआई अगस्त-सितंबर में, पौध रोपण सितंबर-अक्टूबर में तथा खुदाई जनवरी-फरवरी तक करते हैं। 8-10 कि.ग्रा. बीज एक हेक्टर खेत के लिए पर्याप्त होता है।

मृदा एवं खेत की तैयारी

प्याज उत्पादन के लिए बलुई दोमट मृदा उपयुक्त होती हैं लेकिन मध्यम काली मृदा में भी प्याज की खेती आसानी से की जा सकती है। मृदा का पीएच मान 6.5-7.5 के बीच एवं मध्यम कार्बनिक पदार्थ युक्त सर्वोत्तम मानी जाती हैं। वैसे प्याज की फसल को सभी प्रकार की मृदा में उगा सकते हैं। प्याज की अच्छी फसल के लिए मृदा में उपलब्ध पोषक तत्व नाइट्रोजन, फास्फोरस, पोटेशियम, सल्फर, सूक्ष्म पोषक तत्व पर्याप्त मात्रा में होना बहुत आवश्यक है। भूमि को सुविधानुसार 2-3 बार हल से जुताई करके भुरभुरी बनाएं। यदि खेत में अधिक बड़े ढेले हो तो ट्रैक्टर द्वारा रोटोवेटर चलाकर भुरभुरा एवं समतल कर लें तथा 1.5-2.0 मीटर चौड़ाई एवं आवश्यकता अनुसार लम्बाई में छोटी-छोटी क्यारियों तैयार करते हैं, क्यारी की चौड़ाई ऐसी हो, जिससे मेड़ों पर बैठकर निराई, गुड़ाई एवं अन्य कृषि क्रियायें की जा सकें। और नाली के द्वारा सिंचाई करें। मेड़ वाली क्यारियों की अपेक्षा ऊंची उठी क्यारियों में कंद की आकार व गुणवत्ता अच्छी होने के कारण प्याज उत्पादन अच्छी होती है।

पौध तैयार करना

प्याज के बीज बहुत छोटे आकार के होने के कारण इनकी बुवाई मिट्टी की सतह पर छिड़काव विधि द्वारा की जाती है जिस खेत में नर्सरी की बुआई करनी हो बुवाई से 15-20 दिनों पहले सिंचाई करके काली पॉलीथिन बिछा दें, जिससे खेत के हानिकारक कीट एवं रोगाणु एवं खरपतवार के बीज सौरीकरण क्रिया से नष्ट हो जाये। इसके पश्चात खेत जुताई ट्रैक्टर या बैल चलित बक्खर से 5-7 सेमी. गहराई तक करें जिससे मिट्टी कि सतह भुरभुरी हो जाए इससे अधिक गहरी जुताई करने पर काली मृदा में पौध की जड़ें अधिक गहरी चली जाती हैं और निकालते समय प्याज की पौध जड़ के पास से अधिक टूटती है या प्याज के बीज की बुवाई 15-20 सेमी. ऊंची उठी हुई क्यारियों बनाकर नर्सरी तैयार करें इन क्यारियों के मध्य में गहरी एवं चौड़ी नाली बनाएं, जिनसे आसानी से सिंचाई व कृषि क्रियायें की जा सकें। बुआई के पहले बीज को आर्द्र गलन जैसे रोग से बचाव के लिए फफूंदनाशक दवा से उपचारित कर बुआई करें। बुआई के बाद बीज को बारीक छनी हुई मिट्टी या गोबर की खाद या कम्पोस्ट से ढक देने के बाद फव्वारे से सिंचाई करें या क्यारियों के मध्य में बनाई गहरी नाली से पानी धीमी गति की दर से मिट्टी गीली होने तक दें।

सिंचाई एवं खरपतवार प्रबंधन

प्याज एक उथली एवं सूक्ष्म जड़ वाली फसल है। इसकी जड़ें जमीन की सतह से अधिकतम 15 सेमी. तक सीमित होती हैं रबी की प्याज फसल में एक सिंचाई रोपाई के तुरंत बाद करते हैं। इसके बाद 15-20 दिन के अंतराल पर कंद बनने तक 5-6 सिंचाई की आवश्यकता होती है। सूक्ष्म टपक सिंचाई तकनीकी द्वारा प्याज की सिंचाई करना सतह सिंचाई कि अपेक्षा अधिक लाभदायक पाया गया है। इससे उत्पादन और गुणवत्ता के साथ ही पानी की बचत और प्याज अधिक उत्पादन होती हैं इस विधि से पानी की कमी होने पर फसल की सिंचाई की पूर्ति पैदावार को बिना प्रभावित किए की जा सकती है। प्याज में खरपतवार जैसे-मोथा, दूब, बथुआ, दुधी, चौलाई इत्यादि खेत में उगते हैं। इनका नियंत्रण फसल बढ़वार के पहले करना आवश्यक है नहीं तो मजदूर के द्वारा इनका नियंत्रण अधिक खर्चीला हो जाता है। खरपतवार फसल को अधिक नुकसान पहुचाते हैं। खरपतवारनाशी का उपयोग जैसे ऑक्सीफ्लोरोफेन का 10-15 मिली. या क्यूजालोफाप इथाइल 25 मिली. प्रति 15 लीटर पानी के साथ मिलाकर छिड़काव करने से खरपतवार को नियंत्रित किया जा सकता है।

पोषक तत्व प्रबंधन

फसल की अच्छी बढ़वार एवं उत्पादन के लिए 20-25 टन/हेक्टर गोबर की खाद क्यारियों तैयार करने के पूर्व समान रूप के खेत में मिला दें या गोबर की खाद उपलब्ध ना होने की स्थिति में 3 टन वर्मीकम्पोस्ट की खाद का उपयोग करें। प्याज की फसल को 100 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 50 कि.ग्रा. फास्फोरस, 50 कि.ग्रा. पोटाश तथा 30 कि.ग्रा. सल्फर देने की सिफारिश की जाती है। फास्फोरस, पोटाश और सल्फर की पूरी एवं नाइट्रोजन की 25 कि.ग्रा. मात्रा को पौध रोपाई के पहले मिट्टी में मिला दें। और शेष बची नाइट्रोजन को तीन समान भागों में विभाजित करके पौध रोपण के 30, 45 और 60 दिनों के बाद खड़ी फसल एक समान छिड़क देते हैं। यदि प्याज की फसल बालुई मिट्टी में लगाई गई हो तो इसमें नाइट्रोजन व अन्य पोषक तत्वों की हानी जल अंतःस्त्राव के कारण अधिक होती हैं ऐसी स्थिति में पौध रोपण के 15, 30, और 45 दिनों के बाद जल घुलनशील उर्वरक एनपीके (19:19:19) को 150-200 ग्राम प्रति पम्प (15 लीटर जल) और एनपीके (13:0:46) को भी 150-200 ग्राम प्रति पम्प 60, 75 और 90 दिनों के बाद एवं जल घुलनशील पोटेशियम सल्फेट (0:0:50:17.5) का 45, 60, और 75 दिनों के बाद पर्णीय छिड़काव करने से उपज में बढ़ोतरी के साथ लम्बी अवधि के भंडारण के लिए गुणवत्तायुक्त कंद की प्राप्ति होती है।

कंदों की खुदाई एवं भंडारण

रबी मौसम में प्याज के कंदों की खुदाई मध्य मार्च तक उस समय करते हैं, जब पत्तियों का रंग थोड़ा पीला होने लगता है, तथा मिट्टी कि ऊपरी सतह तोड़कर कंद ऊपर निकलने लगती हैं। कंद का ऊपरी भाग डंठल या पत्तियों के नीचे का तना हाथ से दबाने पर सख्त न होकर मुलायम हो जाता है और कंद का ऊपरी हिस्सा पत्तियों सहित गिरने लगता है, इसी समय कंदों की खुदाई करना उपयुक्त होता हैं। प्याज के कंदों का भंडारण वैज्ञानीक तरीके से 0-3 सेल्सियस तापमान तथा 90 प्रतिशत आर्द्रता पर कोल्ड स्टोरेज में करते हैं लेकिन किसान के लिए यह खर्चीला होने के कारण किसान स्वयं सुविधाअनुसार हवादार शुष्क स्थान पर मोटे तार की जाली में प्याज कंद का भंडारण 8-10 माह के लिए आसानी से कर सकते हैं। तार की जाली की संरचना इस प्रकार तैयार करें कि जिसे ईंट या लकड़ी के चौकोर टुकड़ों पर रखा जा सके जिससे प्याज के कंदों के चारों तरफसे हवा का आवागमन हो सके, प्रायोगिक तौर पर यह देखा गया है कि प्याज के कंदों की ग्रेडिंग करके भंडारण से कंद में सड़न-गलन की समस्या 90 प्रतिशत तक कम हो जाती है क्योंकि एक समान आकार के कंद में हवा का संचालन, विभिन्न आकार के कंद की अपेक्षा अधिक होता है।

पौध की रोपाई एवं दूरी

रबी की प्याज फसल की पौध की रोपाई अधिकतर मेड़ बनाकर समतल क्यारियों में की जाती है, लेकिन मध्य में नाली बनाकर ऊंची उठी क्यारियों पर करने से अच्छा परिणाम मिलता है। पौध के रोपण से पूर्व पौध की जड़ों को कार्बेन्डजिम 0.10 प्रतिशत के घोल में 10-15 मिनट डुबोकर रोपाई करने से सड़न एवं चने की कटुआ इल्ली से सुरक्षा और पौध को ज्यादा से ज्यादा स्थापित होने में सहायता मिलती है। प्याज रोपाई के लिए सामान्यतः 10-15 सेमी. पौध से पौध की दूरी रखी जाती हैं।

रबी मौसम की चारा फसल बरसीम

● डॉ. मोनिका ज्योति कुजूर
● डॉ. श्री कृष्ण बिलैया, प्रमुख वैज्ञानिक
पादप प्रजनन और आनुवांशिकी विभाग
जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर

बरसीम

बरसीम पशुओं को पौष्टिक आहार प्रदान करने वाली महत्वपूर्ण हरा चारा वाली फसल है। इसकी खेती रबी ऋतु में पूर्ण सिंचित अवस्था में की जाती है इसके पौधे की बढ़वार काफी तेज होती है। दलहनी फसल होने के कारण इसकी खेती करने से भूमि की गुणवत्ता में सुधार आता है। बरसीम को खिलाने से पशुओं के दूध उत्पादन में बढ़ोतरी होती है। अधिक उत्पादन होने पर हरा चारा को 'हे' अथवा साइलेज बनाते है, जो चारे की कमी होने के समय उत्तम पशु आहार होता है।

दुधारू पशु को उसके शरीर के भार का 2.5 से 3.5 प्रतिशत भोजन की आवश्यकता होती है। दूसरे शब्दों में, एक भैंस को 30 किलोग्राम और गाय को 25 किलोग्राम प्रतिदिन भोजन की आवश्यकता होती है, जिसमें दाना राशन या कंसंट्रेट भी शामिल है। इसमें 60 प्रतिशत गीला और 40 प्रतिशत सूखा चारा हो। कुल हरे-गीले चारे में से 25 प्रतिशत दलहनी प्रजातियों से और 75 प्रतिशत घास से हो। हरा चारा अधिक होने पर भी सूखा चारा जरूरी है। केवल हरा चारा खिलाने से पशु की वृद्धि और दूध की उपज और गुणवत्ता प्रभावित होती है। दलहनी फसलों में 15 से 21 प्रतिशत प्रोटीन पाया जाता है जिसके खिलाने से पशुओं के दूध उत्पादन में बढ़ोतरी होती है।

भूमि का चुनाव

● दोमट मिट्टी और जिन मिट्टियों में जल धारण क्षमता अच्छी होती है। बरसीम सफलतापूर्वक उगाई जा सकती है। सर्वोत्तम है हल्की भूमि में इस फसल को अधिक सिंचाई की आवश्यकता होती है।

खेत की तैयारी

● एक या दो बार जुताई कर मिट्टी को भुरभुरा बना लें और पाटा लगाकर भूमि को समतल करें।

● एक हेक्टेयर खेत में लगभग 20 क्यारियां बनाने से सिंचाई में सुविधा होती है।

खाद और उर्वरक

● गोबर की खाद अथवा कंपोस्ट 10 टन।

● 20 किलोग्राम नत्रजन, 60 किलोग्राम फास्फोरस और 20 किलोग्राम पोटाश प्रति हेक्टर की दर से बोने से पूर्व खेत में बिखेर कर अच्छी तरह से मिट्टी में मिला दें।

● बुवाई के 15-20 दिन बाद यदि पौधे पीले व कमजोर दिखें तो खड़ी फसल में 10-12 किलो यूरिया का छिड़काव प्रति हेक्टेयर की दर से करें।

बीज दर एवं बीज उपचार

● 20 से 25 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर बीज का उपयोग करें।

● कासनी (चिकोरी) की समस्या से निजात पाने के लिए बीज को 5 प्रतिशत नमक के घोल वाले पानी में डुबायें। कासनी का बीज हल्का होने के कारण पानी की सतह पर आ जाता है, इसे निकाल कर नष्ट कर दें। फिर बरसीम के बीज को नमक के घोल वाले पानी से निकाल कर 2-3 बार शुद्ध पानी से धोयें।

● एक किलो बीज में एक ग्राम कार्बेंडाजिम तथा 2 ग्राम थायरम से बीज उपचार करें, इससे मृदा में उपस्थित फफूंदी जनक रोग नहीं आएगी और अच्छा अंकुरण होगा।

● इसके बाद 5 ग्राम राइजोबियम कल्चर प्रति किलोग्राम की दर से बीज उपचार करें।

बोने का समय व तरीका

● बरसीम फसल की बोनी मध्य अक्टूबर से मध्य नवम्बर में करना सबसे उचित है।

● पहली विधि में सुविधाजनक आकार की क्यारियां बनाएं (जो पानी को रोक सकें), सिंचाई करें और खड़े पानी में बीज छिड़काव करें। ध्यान रखें कि खेत में पानी की सतह 5 सेंमी से अधिक न रहे।

● दूसरी विधि में बीज को खेत में छिड़ककर बोनी करें फिर सिंचाई करें। ध्यान रखें की सिंचाई का पानी तेज गति से ना बहे नहीं तो बीज पानी के बहाव की दिशा में इकट्ठा हो जाएगा।

सिंचाई

● पहली सिंचाई बोनी के 5 से 6 दिन बाद करें, इसके बाद आवश्यकतानुसार 15 से 20 दिन के अंतराल पर सिंचाई करें।

● मार्च में सिंचाई 8-10 दिन के अंतराल पर करें।

● कटाई के बाद सिंचाई आवश्यक रूप से करें।

● कुल 13 से 15 सिंचाई की आवश्यकता होती है।

कटाई प्रबंधन

● बरसीम हरे चारे की बहू कटाई वाली फसल है। पहली कटाई बुवाई के 50 से 55 दिन पर करें। तत्पश्चात 25 से 30 दिन के अंतर पर कटाई करें।

● पौधों 8-10 सेंमी ऊंचाई पर काटें।

उपज

मध्य अक्टूबर में बोई गयी फसल से 5-6 कटाई में लगभग 900 से 1000 क्विंटल हरा चारा प्रति हेक्टेयर प्राप्त किया जा सकता है। बुआई में विलंब होने से उपज में कमी आती है। पहली कटाई में समय अधिक लगता है, और हरे चारे का उत्पादन भी कम प्राप्त होता है। अतः चारे का उत्पादन बढ़ाने के लिए बोनी करते समय बरसीम के बीज में 2 किलोग्राम सरसों या 10 किलोग्राम जई का बीज प्रति हेक्टेयर मिलाकर बोने से पहले कटाई के चारा उत्पादन में वृद्धि होती है, क्योंकि बरसीम के साथ सरसों या जई चारा, अतिरिक्त प्राप्त होता है। तथा बाद में बरसीम के उत्पादन में कोई विपरीत असर नहीं पड़ता है।

बीज उत्पादन

बरसीम का बीज तैयार करने के लिए हरा चारा की कटाई मार्च प्रथम सप्ताह तक ही करें इसके बाद फसल को बीज उत्पादन के लिए छोड़ दें इस प्रकार 3-4 कटाई द्वारा 400-500 क्विंटल प्रति हेक्टेयर हरा चारा प्राप्त होता है। साथ-साथ 4 से 5 क्विंटल प्रति हेक्टेयर बीज का उत्पादन प्राप्त हो जाता है।

उन्नत प्रजातियां

जवाहर बरसीम 1: यह जाति संपूर्ण भारतवर्ष में प्रचलित है। इसकी पहली कटाई 55-60 दिन में बाद की कटाई 22-25 दिन के अंतर में की जाती है इसकी बीज उत्पादन क्षमता 3.5 से 4 क्विंटल /हेक्टेयर है। इसमें प्रोटीन की मात्रा 17-19 प्रतिशत है।

जवाहर बरसीम 5: इस जाति में अधिक शाखाएं व पत्तियां होती है। इसकी पहली कटाई 55-60 दिन की में तथा दूसरी कटाई 22-25 दिन के अंदर में की जाती है। यह प्रजाति जड़ गलन रोग के लिए प्रतिरोधी है। इसकी बीज उत्पादन क्षमता 4 से 5 क्विंटल/हेक्टेयर है। इसमें प्रोटीन की मात्रा 18 से 30 प्रतिशत है।

जवाहर बरसीम 05-9: यह बरसीम की नई किस्म है। औसत हरे चारे की उपज 750 क्विंटल से 950 क्विंटल /हेक्टेयर और सूखे चारे की उपज 99.83 क्विंटल/हेक्टेयर है। इसकी बीज उत्पादन क्षमता 4.34 क्विंटल/हेक्टेयर है। यह किस्म पत्ती अंगमारी और माहू के लिए प्रतिरोधी है। इसमें प्रोटीन की मात्रा 17-18 प्रतिशत है।

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

संतरे की उत्पादकता बढ़ाने 70 करोड़ का सेंटर बनेगा : श्री चौहान

नागपुर में एग्रो विजन 2025 का शुभारंभ

नागपुर (कृषक जगत)। केंद्रीय कृषि तथा ग्रामीण विकास मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान और केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री श्री नितिन गडकरी ने नागपुर में एग्रो विज़न 2025 का भव्य शुभारंभ किया। समारोह में कृषि मंत्री श्री चौहान ने संतरा उत्पादकता बढ़ाने के लिए नागपुर में 70 करोड़ रुपये से क्लीन प्लांट सेंटर स्थापित करने की घोषणा की। उन्होंने कहा कि कमजोर या वायरस-ग्रस्त पौधे किसान की वर्षों की मेहनत नष्ट कर देते हैं, इसलिए चयनित नर्सरियों को 4 करोड़ रुपये तक तथा मध्यम/छोटी नर्सरियों को 2 करोड़ रुपये तक आर्थिक सहायता उपलब्ध कराई जाएगी।

महिला सशक्तिकरण पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि 'आज सरकारें बहना बना रही हैं-लाड़की बहना, लाड़ली बहना, जीविका बहना—उनकी शक्ति को कोई अनदेखा नहीं कर सकता।' उन्होंने कहा कि एग्रो विज़न महिलाओं को आर्थिक रूप से मजबूत बनाने की दिशा में नई राह खोल रहा है।

किसानों की समस्याओं पर चर्चा करते हुए श्री चौहान ने बताया कि अब जलभराव और जंगली जानवरों द्वारा फसल क्षति को प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना में शामिल कर लिया गया है। इससे किसानों को प्राकृतिक व आकस्मिक क्षति में भी राहत मिलेगी। साथ ही आलू, प्याज, टमाटर जैसी उपज को बड़े शहरों तक भेजने का पूरा परिवहन खर्च अब केंद्र सरकार उठाएगी, जिससे किसानों को बेहतर दाम मिल सकें।

कार्यक्रम के दौरान केंद्रीय मंत्री श्री चौहान और श्री गडकरी ने राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड के 65 करोड़ रुपये के नए प्लांट का शिलान्यास भी किया, जो 2027 से नागपुर में शुरू होगा।

एग्रो विज़न में आधुनिक कृषि तकनीकों, उन्नत उपकरणों, फसल प्रबंधन समाधानों और नवाचारों की भव्य प्रदर्शनी लगाई गई। विशेषज्ञों ने जल संरक्षण, फसल विविधीकरण और आधुनिक कृषि विपणन पर अपने विचार साझा किए।

कार्यक्रम में महाराष्ट्र सरकार के मंत्री, जनप्रतिनिधि, कृषि वैज्ञानिक, कुलपति, शोध संस्थान प्रतिनिधि, उद्यमी और बड़ी संख्या में किसान उपस्थित रहे।

कृषक जगत स्टॉल बना आकर्षण का केन्द्र

नागपुर एग्रो विजन में कृषक जगत के स्टॉल पर सिवनी उपसंचालक कृषि श्री एस. के. धुर्वे तथा सहायक संचालक श्री प्रफुल्ल घोड़ेश्वर (बायें), उप परियोजना संचालक आत्मा छिंदवाड़ा श्रीमती प्राची कौतू एवं सहायक संचालक कृषि श्री दीपक चौरसिया (दायें) ने भी भ्रमण कर नवीनतम तकनीकों की जानकारी ली।

देश में रबी बुवाई 208 लाख हेक्टेयर में हुई

नई दिल्ली (कृषक जगत)। देश में रबी फसलों की बुवाई इस वर्ष तेज रफ्तार से आगे बढ़ रही है। कृषि मंत्रालय द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार, 14 नवंबर 2025 तक कुल 208.19 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में बुवाई पूरी की जा चुकी है। यह आंकड़ा पिछले वर्ष की इसी अवधि के 188.73 लाख हेक्टेयर की तुलना में 19.46 लाख हेक्टेयर अधिक है।

दालों की बुवाई ने इस सीजन में विशेष बढ़त दर्ज की है। दालों के कुल रकबे में 3.88 लाख हेक्टेयर की वृद्धि हुई और यह बढ़कर 52.82 लाख हेक्टेयर पर पहुंच गया है। चना 37.43 लाख हेक्टेयर तक पहुंच गया, जिसमें 3.39 लाख हेक्टेयर की बढ़त दर्ज हुई। मसूर का क्षेत्र भी बढ़कर 6.83 लाख हेक्टेयर हो गया, जो पिछले वर्ष से 0.74 लाख हेक्टेयर अधिक है। सरकार द्वारा प्रोत्साहित की जा रही 'श्री अन्न' (मिलेट्स) श्रेणी में भी ठोस वृद्धि देखी गई। इन फसलों के तहत क्षेत्र बढ़कर 15.53 लाख हेक्टेयर तक पहुंच गया है, जो पिछले वर्ष की तुलना में 2.04 लाख हेक्टेयर अधिक है।

उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज करने वाली फसलों में ज्वार सबसे आगे रहा, जिसका बुवाई क्षेत्र बढ़कर 8.82 लाख हेक्टेयर तक पहुंच गया है। मक्का की बुवाई भी मजबूत रही और यह 4.26 लाख हेक्टेयर के स्तर पर दर्ज की गई। तिलहन फसलों की बुवाई में इस वर्ष अच्छा सुधार देखने को मिला है और कुल क्षेत्रफल में 3.24 लाख हेक्टेयर की वृद्धि दर्ज की गई है। तिलहनों में सबसे अधिक बढ़ोतरी रेपसीड और सरसों में हुई, जिनका क्षेत्र बढ़कर 64.23 लाख हेक्टेयर तक पहुंच गया है-यह पिछले वर्ष की तुलना में 3.71 लाख हेक्टेयर की उल्लेखनीय बढ़त है।

इस वर्ष देश की प्रमुख रबी फसल गेहूं का क्षेत्र बढ़कर 66.23 लाख हेक्टेयर हो गया है, जो पिछले वर्ष से 9.68 लाख हेक्टेयर अधिक है। उधर, धान की बुवाई भी 7.44 लाख हेक्टेयर तक पहुंच गई, जिसमें 0.62 लाख हेक्टेयर की वृद्धि हुई है।

प्रमुख रबी फसलों की बुवाई
14 नवम्बर 2025 की स्थिति (लाख हे. में)

फसल	सामान्य क्षेत्र	बुवाई 2025-26	बुवाई 2024-25
गेहूँ	**312.35**	**66.23**	**56.55**
चावल	**42.93**	**7.44**	**6.82**
दालें	**140.42**	**52.82**	**48.93**
चना	100.99	37.43	34.04
मसूर	15.13	6.83	6.08
मोटे अनाज	**55.33**	**15.53**	**13.5**
ज्वार	24.62	8.82	8.21
मक्का	23.61	4.26	3.63
तिलहन	**86.78**	**66.17**	**62.93**
सरसों	79.17	64.23	60.52
मूंगफली	3.69	0.79	1.13
अलसी	1.93	0.67	0.95
कुल	**637.81**	**208.19**	**188.73**

नोट : कुल क्षेत्रफल के आंकड़े चार्ट से अलग हैं, क्योंकि सभी फसलों को चार्ट में शामिल नहीं किया गया है।
स्रोत : कृषि मंत्रालय

फोटो गैलरी

जल पुरस्कार

राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु ने विज्ञान भवन नई दिल्ली में आयोजित कार्यक्रम में राज्यों को जल पुरस्कार वितरित किए। इस अवसर पर कार्यक्रम में केंद्रीय जल शक्ति मंत्री श्री सी.आर. पाटिल भी मौजूद थे। कार्यक्रम में मध्य प्रदेश के गुना नगरीय निकाय को भी पुरस्कृत किया गया।

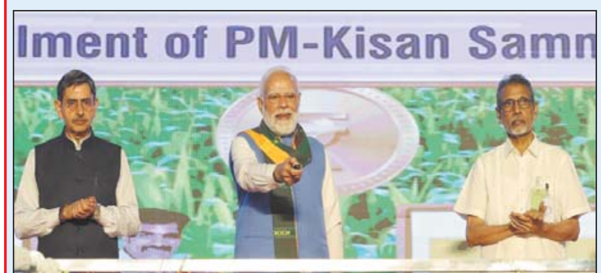

सम्मान निधि

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने तमिलनाडु के कोयंबटूर से किसान सम्मान निधि योजना की 21वीं किस्त के रूप में देशभर के 9 करोड़ किसानों को 18,000 करोड़ रुपये ट्रांसफर किए गए हैं। इसमें मध्य प्रदेश के 81 लाख से अधिक किसानों को लगभग 1640 करोड़ रुपये की राशि मिली।

अवलोकन

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने विदिशा के कागपुर में हाट बाजार के लोकार्पण समारोह में स्वदेशी उत्पादों के स्टॉल्स का अवलोकन किया।

शपथ

पटना के गांधी मैदान में श्री नीतीश कुमार ने रिकॉर्ड 10वीं बार बिहार के मुख्यमंत्री पद की शपथ ली। उन्हें यह शपथ राज्यपाल ने दिलाई। उनके बाद उप मुख्यमंत्री के रूप में सम्राट चौधरी और विजय सिन्हा ने भी पद एवं गोपनीयता की शपथ ग्रहण की। इसके साथ ही एनडीए गठबंधन की नई सरकार ने औपचारिक रूप से कामकाज की शुरुआत कर दी। समारोह में कुल 26 मंत्रियों ने शपथ ली।

देश में खाद्यान्न उत्पादन 357 मिलियन टन से अधिक होने की संभावना

वर्ष 2024-25 का अंतिम उत्पादन अनुमान जारी

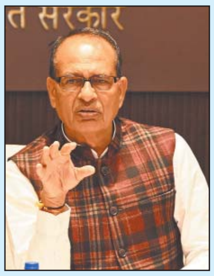

नई दिल्ली (कृषक जगत)। केंद्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने नई दिल्ली में वर्ष 2024-25 के फसल उत्पादन के अंतिम अनुमान जारी करते हुए रिकॉर्ड स्तर पर खाद्यान्न उत्पादन के लिए देश के किसानों का आभार व्यक्त किया। साथ ही दलहन-तिलहन में भी आशाजनक वृद्धि के लिए प्रसन्नता व्यक्त की। श्री चौहान ने बताया कि देश के खाद्यान्न उत्पादन में पिछले 10 वर्षों में अब-तक की सबसे बड़ी वृद्धि देखी जा रही है। वर्ष 2015-16 में जहां उत्पादन 251.54 मिलियन टन था वो अब 106 मिलियन टन बढ़कर 357.73 मिलियन टन हो गया है।

केंद्रीय कृषि मंत्री ने बताया कि चावल उत्पादन भी रिकॉर्ड स्तर पर बढ़कर 1501.84 लाख टन हो गया है। यह पिछले वर्ष के 1378.25 लाख टन चावल उत्पादन से 123.59 लाख टन अधिक है। वही गेहूं में भी रिकॉर्ड वृद्धि दर्ज की गई है। गेहूं उत्पादन बढ़कर 1179.45 लाख टन हो गया है, जो पिछले वर्ष के 1132.92 लाख टन से 46.53 लाख टन अधिक है। मूंग उत्पादन बढ़कर 42.44 लाख टन, सोयाबीन उत्पादन 152.68 लाख टन, मूंगफली उत्पादन 119.42 लाख टन की रिकॉर्ड वृद्धि हुई है। मक्का और श्री अन्न का उत्पादन 434.09 लाख टन और 185.92 लाख टन अनुमानित है, जो पिछले वर्ष क्रमश: 376.65 लाख टन और 175.72 लाख टन था।

केंद्रीय मंत्री ने दलहन-तिलहन के उत्पादन में भी आशाजनक वृद्धि पर प्रसन्नता जताई और बताया कि वर्ष 2024-25 के दौरान कुल तिलहन का उत्पादन रिकॉर्ड 429.89 लाख टन अनुमानित है, जो वर्ष 2023-24 के 396.69 लाख टन उत्पादन से 33.20 लाख टन अधिक है। तिलहन उत्पादन में रिकॉर्ड वृद्धि देखी गई क्योंकि मूंगफली और सोयाबीन का अनुमानित उत्पादन क्रमश: 119.42 लाख टन और 152.68 लाख टन रहा, जो पिछले वर्ष के क्रमश: 101.80 लाख टन और 130.62 लाख टन की तुलना में क्रमश: 17.62 लाख टन और 22.06 लाख टन अधिक है। रेपसीड और सरसों का उत्पादन 126.67 लाख टन अनुमानित है।

कुल खाद्यान्न	**- 3577.32 लाख टन (रिकॉर्ड)**
● चावल	- 1501.84 लाख टन (रिकॉर्ड)
● गेहूँ	- 1179.45 लाख टन (रिकॉर्ड)
● मोटे अनाज	- 639.21 लाख टन
● मक्का	- 434.09 लाख टन
कुल दलहन	**- 256.83 लाख टन**
● श्री अन्न	- 185.92 लाख टन
● चना	- 111.14 लाख टन
● मूंग	- 42.44 लाख टन
● तूर	- 36.24 लाख टन
कुल तिलहन	**- 429.89 लाख टन**
● सोयाबीन	- 152.68 लाख टन (रिकॉर्ड)
● मूंगफली	- 119.42 लाख टन (रिकॉर्ड)
● रेपसीड एवं सरसों	- 126.67 लाख टन
गन्ना -	**4546.11 लाख टन**
कपास -	**297.24 लाख गाठें (प्रति 170 कि. ग्रा.)**
पटसन एवं मेस्ता	**- 88.02 लाख गाठें (प्रति 180 कि. ग्रा.)**

नया व्यापार बनाने के लिए मिलेगा बोनस

72वें अखिल भारतीय सहकारी सप्ताह के समापन समारोह में उत्कृष्ट कार्य करने वाले सहकारी बैंकों और पैक्स को सम्मानित करते हुए सहकारिता मंत्री श्री विश्वास सारंग। इस अवसर पर सहकारिता आयुक्त श्री मनोज पुष्प, अपेक्स बैंक के एमडी श्री मनोज गुप्ता एवं उपसचिव सहकारिता श्री सिन्हा भी उपस्थित थे।

सूचनाओं का त्वरित संप्रेषण करें जनसंपर्क अधिकारी : श्री सक्सेना

भोपाल (कृषक जगत)। आयुक्त जनसंपर्क श्री दीपक सक्सेना ने कहा है कि जनसंपर्क अधिकारी जन कल्याण के लिए शासकीय योजनाओं और कार्यक्रमों को प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक, डिजिटल और सोशल मीडिया के माध्यम से आम जनता तक पहुंचाएं। साथ ही आमजन की भावनाओं, आवश्यकताओं से निरंतर शासन और प्रशासन को अवगत कराएं। मीडिया, जनप्रतिनिधियों, अधिकारियों और समाज के विभिन्न वर्गों से संवाद और सम्पर्क कर जनहित में सूचनाओं का त्वरित संप्रेषण करें। जनसंपर्क आयुक्त श्री सक्सेना भोपाल में जनसंपर्क अधिकारियों की राज्य स्तरीय दिवसीय कार्यशाला को संबोधित कर रहे थे। कार्यशाला में विषय विशेषज्ञ श्री पंकज श्रीवास्तव, श्री मनोज मनु, श्री शरद द्विवेदी और श्री सचिन चौधरी ने प्रिंट, इलेक्ट्रानिक, सोशल और डिजिटल मीडिया के संबंध में सारगर्भित जानकारी दी। कार्यशाला में माइंड स्टॉर्मिंग सेशन हुए, जिनमें आयुक्त जनसंपर्क श्री सक्सेना और विषय- विशेषज्ञों द्वारा जनसंपर्क अधिकारियों से गहन संवाद किया गया। अपर संचालक जी.एस. वाधवा एवं श्री संजय जैन संयुक्त संचालक श्री पंकज मित्तल, श्री अशोक मनवानी, श्री आर.आर पटेल सहित प्रदेश के सभी संभागीय और जिला अधिकारी उपस्थित थे।

जनसंपर्क आयुक्त ने कहा कि शासन के प्रचार-प्रसार में जिला कार्यालयों की महत्वपूर्ण भूमिका है। सभी जिला कार्यालयों को संसाधन और मैनपॉवर देकर सशक्त बनाया जाएगा।

प्रदेश में गेहूं की बोनी 55 फीसदी हुई

कुल रबी बुवाई 80 लाख हेक्टेयर पार

(विशेष प्रतिनिधि)

भोपाल (कृषक जगत)। प्रदेश में चालू रबी सीजन 2025-26 में अब तक 80 लाख 75 हजार हेक्टेयर में बोनी हो गई है। जबकि गत वर्ष इस अवधि में 80.14 लाख हेक्टेयर में बोनी हुई थी। राज्य की प्रमुख फसल गेहूं की बोनी अब तक 53.47 लाख हेक्टेयर में हो गई है। जो लक्ष्य के विरुद्ध 55 फीसदी है। इस वर्ष रबी फसलों का लक्ष्य 138.85 लाख हेक्टेयर रखा गया है। अब तक लक्ष्य के विरुद्ध कुल रबी बोनी 58 फीसदी पूरी हो गई है।

कृषि विभाग के मुताबिक प्रदेश में रबी फसलों का सामान्य क्षेत्र 137 लाख 67 हजार हेक्टेयर है। इस वर्ष 138.85 लाख हेक्टेयर में रबी फसलें ली जाएंगी।

कृषि विभाग के मुताबिक अब तक 80.75 लाख हेक्टेयर में बोनी कर ली गई है। इसमें राज्य की प्रमुख रबी फसल गेहूं की बोनी 53.47 लाख हेक्टेयर में हुई है। जबकि गत वर्ष अब तक 45.31 लाख हे. में गेहूं बोया गया था। दूसरी प्रमुख फसल चने की बोनी अब तक 9.69 लाख हेक्टेयर में हो गई है जो गत वर्ष समान अवधि में 14.12 लाख हे. में हुई थी। अन्य फसलों में अब तक मटर 2.18 लाख हे. में, मसूर 4.60 लाख हेक्टेयर में बोई गई है।

रबी फसलों की बुवाई
21 नवम्बर 2025 तक (लाख हे. में)

फसल	लक्ष्य	बुवाई
गेहूं	96.81	53.47
जौ	0.34	0.19
चना	17.28	9.69
मटर	3.30	2.18
मसूर	6.36	4.60
सरसों	12.23	9.84
अलसी	1.20	0.50
गन्ना	1.33	0.29

राज्य की प्रमुख तिलहनी फसल सरसों की बोनी 9.84 लाख हेक्टेयर में हुई है जबकि गत वर्ष समान अवधि में 10.84 लाख हेक्टेयर में बोनी हो गई थी। इस वर्ष 12.23 लाख हेक्टेयर में सरसों की बोनी का लक्ष्य रखा गया है। वहीं अलसी की बोनी 50 हजार हेक्टेयर में हुई है। इस वर्ष गन्ना 1.33 लाख हेक्टेयर में लिया जायेगा। इसके तहत अब तक 29 हजार हेक्टेयर में बोनी हो गई है। प्रदेश में अब तक कुल अनाज फसलें 53.67 लाख हेक्टेयर में, दलहनी फसलें 16.46 लाख हे. में एवं तिलहनी फसलें 10.33 लाख हेक्टेयर में बोई गई हैं।

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें www.krishakjagat.org

नरवाई प्रबंधन में आधुनिक मशीनों को अपनाएं : श्रीमती पटले

सिवनी (कृषक जगत)। पर्यावरण के प्रति हितैषी बने मिट्टी की गुणवत्ता, मनुष्य के स्वास्थ्य को ध्यान में रखकर नरवाई जलाने से विपरीत प्रभाव पड़ता है। नरवाई (पराली) प्रबंध करने के लिए कृषकों को आधुनिक कृषि यंत्रों का उपयोग करना चाहिए। यह बात मोबाइल श्रेडर मशीन के प्रदर्शन का अवलोकन करते हुए कलेक्टर श्रीमती शीतला पटले ने किसानों से कही। श्रीमती पटले ने सिवनी विकासखण्ड के ग्राम भाटीवाड़ा पहुंचकर कृषक श्री संतोष सनोडिया के खेत में मोबाइल श्रेडर मशीन का प्रदर्शन देखा। यह उन्नत कृषि उपकरण मेढ़-नाली पद्धति से उगाई गई मक्का फसल के उत्पादन उपरांत नरवाई प्रबंधन में प्रभावी सिद्ध हो रहा है। मशीन मक्के के पौधों को जड़ सहित बारीक टुकड़ों में काटकर मिट्टी में मिला देती है। इससे खेत अगली फसल की बोनी हेतु तैयार हो जाता है तथा मक्के के अवशेष जैविक खाद के रूप में उपयोगी सिद्ध होते हैं।

कलेक्टर श्रीमती पटले ने कृषक से मशीन के उपयोग के अनुभव साझा किए और क्षेत्र के अन्य किसानों को भी इस तकनीक को अपनाने के लिए सुझाव दिए। कलेक्टर श्रीमती पटले ने उपस्थित अधिकारियों को निर्देश दिए कि नरवाई प्रबंधन में कारगर मोबाइल श्रेडर, सीडर, हैप्पी सीडर और सुपर सीडर जैसे उन्नत कृषि उपकरणों के उपयोग हेतु किसानों को प्रोत्साहित करें। साथ ही शासन की अनुदान योजनाओं का अधिकतम लाभ किसानों तक पहुंचाना सुनिश्चित करें। भ्रमण के दौरान उप संचालक कृषि श्री सुधीर कुमार धुर्वे, सहायक संचालक कृषि श्री प्रफुल्ल कुमार घोड़ेश्वर सहित अन्य अधिकारी एवं कृषक उपस्थित थे।

सुपर सीडर नरवाई प्रबंधन में अग्रणी : श्री भगत

रायसेन (कृषक जगत)। ग्राम बागोद विकासखंड सांची में नरवाई प्रबंधन पर कृषक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में श्री के.पी. भगत उपसंचालक कृषि द्वारा खेतों में धान फसल अवशेष को न जलाने की अपील की गई और बताया गया कि पराली जलाने से मिट्टी के पोषक सूक्ष्म जीवाणु नष्ट,वातावरण प्रदूषित होता है, पालतू मवेशियों हेतु चारा भूसा की कमी,पशु पक्षियों को आग से क्षति तथा समीप वाले खेतों में अग्नि दुर्घटना की संभावना बढ़ जाती है। ऐसी स्थिति से बचने के लिए पराली को जलाने के बजाय खेतों की मिट्टी में मिलाएं जिसके लिए सुपर सीडर यंत्र बहुत ही कारगर है।

श्री भगत ने बताया हैप्पी सीडर, रोटावेटर जैसे कृषि यंत्रों का उपयोग भी कर सकते हैं। श्री सुनील सोने सहायक संचालक कृषि ने सम्बोधित कर रासायनिक खेती के स्थान पर प्राकृतिक खेती अपनाने की सलाह दी।

प्राकृतिक खेती अनुसार कृषकों के खेतों में उत्पादित और उपलब्ध गाय के गोबर, गौमूत्र, भूसा और नीम पत्ती आदि का उपयोग खेतों में करके प्राकृतिक रूप से शुद्ध और बिना रसायन के जैविक अनाज का उत्पादन किया जाय। कार्यक्रम में श्री बी.एस. कोठारी सहायक कृषि यंत्री रायसेन भी उपस्थित थे।

कृषि विज्ञान केन्द्र की 39वीं वैज्ञानिक बैठक सम्पन्न

नीमच (कृषक जगत)। कृषि विज्ञान केन्द्र की वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक हाइब्रिड मोड (ऑन एवं ऑफ लाईन) पर डॉ. एच. पी. सिंह, प्रभारी अधिष्ठाता, उद्यानिकी महाविद्यालय, मंदसौर की अध्यक्षता एवं डॉ. अखिलेश सिंह, प्रतिनिधि, निदेशक, राविसिंकृविवि, ग्वालियर, डॉ. ए. ए. राउत, वैज्ञानिक, अटारी, जोन- 9, जबलपुर के आतिथ्य में सम्पन्न हुई। बैठक में रिंग केविके के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख, मंदसौर एवं जावरा, रतलाम के साथ जिले के विभिन्न लाइन डिपार्टमेंट के अधिकारी व प्रगतिशील कृषक एवं कृषक महिला सम्मिलित हुए।

कार्यक्रम में केन्द्र के प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. सी. पी. पचौरी ने सभी अधिकारियों एवं जिले के लाईन डिपार्टमेन्ट के प्रतिनिधियों तथा प्रगतिशील किसानों/किसान महिलाओं के आपसी परिचय उपरान्त सभी का स्वागत किया। विगत बैठक में माननीय सदस्य महानुभावों द्वारा दिए गए सुझावों पर केन्द्र द्वारा की गई कार्यवाही बताई।

केन्द्र द्वारा संचालित गतिविधियों के प्रगति प्रतिवेदन विशेषकर ओएफटी, एफएलडी, प्रशिक्षण, विस्तार गतिविधियां तथा केन्द्र की विशेष उपलब्धियों के साथ प्रस्तावित कार्ययोजना का प्रस्तुतिकरण किया।

कार्यक्रम में कृषि, उद्यानिकी, पशुपालन, सिंचाई, वन विभाग, मत्स्यकी, उपज मण्डी, दुग्ध संघ, जिला अग्रणी बैंक, जिला पंचायत, मृदा परीक्षण प्रयोगशाला, एफ.पी.ओ., एन.जी.ओ. आदि विभागों के जिला अधिकारी/प्रतिनिधि के साथ जिले के प्रगतिशील किसान/किसान महिला एवं केन्द्र के वैज्ञानिक डॉ. पी. एस. नरुका, डॉ. एस. एस. सारंगदेवोत, डॉ. शिल्पी वर्मा, डॉ. जे. पी. सिंह एवं श्रीमती संयुक्ता पाण्डे मौजूद थे।

पांढुर्ना में कपास पंजीयन की स्थिति निराशाजनक

'कपास किसान' मोबाइल ऐप से पंजीयन करें किसान : कलेक्टर पांढुर्ना

(उमेश खोड़े, कृषक जगत, पांढुर्ना)। पांढुर्ना जिले में कपास उत्पादक किसानों द्वारा कपास पंजीयन में रूचि नहीं ली जा रही है, जबकि भारतीय कपास निगम (सीसीआई) द्वारा पांढुर्ना और सौंसर की कृषि उपज मंडियों में कपास खरीदी केंद्र भी स्थापित कर दिए हैं। इस असंतोषजनक स्थिति को देखते हुए कलेक्टर श्री नीरज कुमार वशिष्ठ ने कपास उत्पादक किसानों से अपील की है कि वे एमएसपी योजना के अंतर्गत कपास विक्रय के लिए अपना पंजीयन 'कपास किसान' मोबाइल ऐप के माध्यम से निर्धारित अवधि में अवश्य कराएं, ताकि फसल बेचने में कोई परेशानी न हो।

पांढुर्णा कलेक्टर श्री नीरज कुमार वशिष्ठ एवं उप संचालक कृषि छिंदवाड़ा/पांढुर्ना श्री जितेन्द्र कुमार सिंह ने जिले के सभी कपास उत्पादक किसानों से अपील की है कि वे फसल वर्ष 2025-26 से न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) योजना के अंतर्गत कपास विक्रय के लिए अपना पंजीयन 'कपास किसान' मोबाइल ऐप के माध्यम से समय पर अवश्य कराएं। उप संचालक कृषि श्री सिंह ने बताया कि पंजीयन की अवधि 1 सितम्बर 2025 से 31 दिसम्बर 2025 तक रहेगी। किसानों की मदद के लिए कलेक्टर के निर्देश पर अनुविभागीय अधिकारी (कृषि) अनुभाग सौंसर द्वारा विकासखंड सौंसर के 9 और पांढुर्ना विकासखंड के 7 कृषि विस्तार अधिकारियों को अपने कार्यक्षेत्र के कपास उत्पादक किसानों का कपास किसान एप में पंजीयन का एवं एप द्वारा प्रचार-प्रसार दायित्व सौंपा गया है, जो तत्काल प्रभाव से लागू हो गया है। पांढुर्ना/सौंसर के सीसीआई केंद्र प्रभारी श्री के. एल. बघेल ने कृषक जगत को बताया कि अभी तक सौंसर तहसील में 2508 और पांढुर्ना तहसील में मात्र 389 किसानों ने ही न्यूनतम समर्थन मूल्य योजना के अंतर्गत कपास विक्रय के लिए अपना पंजीयन कराया है। उल्लेखनीय है कि भारत सरकार के कृषि मंत्रालय द्वारा वर्ष 2025-26 (अक्टूबर-सितंबर) के लिए कपास की दो प्रमुख किस्मों उचित (फेयर) औसत गुणवत्ता की मध्यम लंबाई वाली कपास (मीडियम स्टेपल कॉटन), जिसके रेशे की लंबाई 24.5 मि.मी. से 25.5 मि.मी. और माइक्रोनियर मान 4.3 से 5.1 है तथा लंबी रेशे वाली कपास (लॉन्ग स्टेपल कॉटन), जिसके रेशे की लंबाई 29.5 मि.मी. से 30.5 मि.मी. और माइक्रोनियर मान 3.5 से 4.3 है, के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) घोषित किया गया है। मध्यम लंबाई वाली कपास का समर्थन मूल्य रू. 7710 प्रति क्विंटल तथा लंबी रेशे वाली कपास का समर्थन मूल्य रू. 8110 प्रति क्विंटल निर्धारित किया गया है। उपरोक्त दोनों प्रमुख किस्मों के समर्थन मूल्य गुणवत्ता, सामान्य मूल्य अंतर तथा अन्य संबंधित तथ्यों को ध्यान में रखते हुए स्वच्छ औसत गुणवत्ता (एफएक्यू) के आधार पर तय किए गए हैं। अधिक जानकारी के लिए सीसीआई प्रभारी श्री के. एल. बघेल के मो.: 9437235033 पर तथा फील्ड अधिकारी श्री अजय वर्मा के मो.: 8358063483 पर संपर्क कर सकते हैं।

मक्का के खेतों में स्लेशर से नरवाई प्रबंधन का सफल प्रयोग

शिवपुरी (कृषक जगत)। नरवाई प्रबंधन के प्रति किसानों में जागरूकता बढ़ाने हेतु जारी अभियान का सकारात्मक प्रभाव ग्रामीण क्षेत्रों में देखने को मिल रहा है। इसी क्रम में विकासखंड बदरवास के ग्राम पिरोट के प्रगतिशील किसान श्री विजय यादव ने उदाहरण प्रस्तुत करते हुए अपने खेत में मक्का फसल कटाई के बाद बचे हुए अवशेषों का प्रबंधन आधुनिक कृषि यंत्र स्लेशर के माध्यम से किया। इस पहल से जहां खेत की उर्वरता बनी रही, वहीं फसल अवशेष जलाने से होने वाले प्रदूषण से भी बचाव हुआ।

किसान श्री विजय यादव के इस प्रयास से प्रेरित होकर इसी ग्राम के अन्य किसान श्री राजकुमार यादव, श्री विवेक यादव एवं श्री सोनू यादव ने भी इस तकनीक को अपनाया और अपने खेतों में मक्का अवशेषों का वैज्ञानिक प्रबंधन किया। कृषि विभाग के नरवाई प्रबंधन जागरूकता अभियान के तहत यह पहल पर्यावरण संरक्षण के साथ-साथ मृदा स्वास्थ्य संवर्धन की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

समस्या– रबी या खरीफ की फसल बोआई करते हैं पर जमीन में उकटा लग जाता है उचित सलाह बतलायें।

– शोभित सिंह मार्को

समाधान – फसलों का उकटा रोग बहुत सामान्य रूप से सभी फसलों पर आक्रमण करके नुकसान पहुंचाता है। वास्तव में इसकी फफूंदी जमीन में रहती है साल दर साल बढ़ती जाती है। चना, गेहूं, मटर, मसूर, सोयाबीन सभी में इसका आक्रमण होता है। इससे बचाव के लिये निम्न उपाय करें–

- फसलों का हेरफेर एक क्षेत्र विशेष में, बार–बार एक ही फसल नहीं लें।
- बीज को बुआई पूर्व फफूंदनाशी दवा से उपचारित करें। सामान्यत: थाईरम दो से तीन ग्राम अथवा ट्राईकोडरमा 5 ग्राम/किलो बीज के हिसाब से बीज को उपचारित करें।
- ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई तीन साल में एक बार अवश्य करें।
- मेढ़ों की सफाई करें
- बीज की साफ–सफाई करें।

समस्या– गेहूं की अधिक से अधिक उपज के लिये आधुनिक तरीका बतलायें।

– कमलेश शर्मा

समाधान – आपका प्रश्न सामयिक है आपने गेहूं की अधिक उपज के नुस्खे जानना चाहते हैं तो लीजिए जानिये इन नुस्खों को और अपनाये भी।

- गेहूं हो या कोई अन्य जिन्स विकसित जातियों के उपयोग से उत्पादन की प्रथम सीढ़ी आसान हो जाती है। उन्नत किस्में जैसे एचआई 1605, जेडब्ल्यू 3020, 3173, 3211, एचआई 8823, जेडब्ल्यू 3269, एमपी 3288, डीबीडब्ल्यू 119, एचआई 1655 (चिन्हित) ही लगायें.
- बीज का उपचार थाईरम अथवा वीटावेक्स से अवश्य करें ताकि अच्छा अंकुरण प्राप्त हो सके।
- भूमि की तैयारी बहुत अच्छी तरह से की जानी चाहिए। बीज अधिक गहराई पर ना बोया जाये तथा 100 किलो/हे. से अधिक ना डाला जाये।
- सिफारिश के अनुरूप उर्वरक डालें तथा संतुलित उर्वरक उपयोग करें साथ ही उर्वरक की स्थापना बीज के नीचे की जाये, व खाद, बीज का मिश्रण कदापि न करें।
- क्रांतिक अवस्था पर सिंचाई तथा वाडर स्ट्रिप का उपयोग हो ताकि जल एवं समय दोनों की बचत हो सके।
- मंडुसी खरपतवार (Phalaris minor) से उपज में 25–30 प्रतिशत की कमी आ सकती है। मंडुसी के लिए क्लोडिनाफॉप प्रोपरगिल 9% + मेट्रिब्यूज़िन 20% WP (w/w) (Clodinafop propargyl 9% + Metribuzin 20% WP (w/w) या सल्फोसल्फ्यूरॉन 75% WG (Sulfosulfuron 75% WG) का प्रयोग करें।

समस्या – मैं सिंचित चना लगाना चाहता हूं तकनीकी बतलायें।

– सुन्दरलाल पटेल

समाधान – आप चने की सिंचित खेती करना चाहते हैं कृपया निम्न बिंदुओं पर ध्यान दें।

- जातियों में जे.जी.–1, 16, 74, 130, 218, 412, 322, जाकी–9218, जवाहर चना काबुली–1, जवाहर चना काबुली–3, काक–2, आई.सी.सी.व्ही.–2, विजय, विशाल, जे.जी.–63, जे.जी.–226,जे.जी.–36 इत्यादि।
- चने में वायुमंडल से नत्रजन इकट्ठा करने की प्राकृतिक शक्ति है फिर भी प्रारंभिक अवस्था के लिये 43 किलो यूरिया, 250 किलो सिंगल सुपर फास्फेट तथा 20 किलो गंधक डालने से अच्छा उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है।
- उर्वरक की स्थापना सदैव बीज के नीचे की जाये।
- यदि शीतकालीन वर्षा ना हो पाई हो तो बुआई के 45 दिनों बाद एक सिंचाई अवश्य करें।
- खेत से सोयाबीन के स्वयं ऊगे पौधों को निकाल कर नष्ट करें।
- पक्षियों के बैठने के लिये 'टी' आकार की खूटियां जगह–जगह अवश्य लगायें।
- फेरोमेन ट्रेप लगाकर कीट नियंत्रण करें।
- खरपतवार नियंत्रण के लिये स्टाम्प की 4.5 लीटर मात्रा 600 लीटर पानी में घोल बनाकर बुआई के तुरंत बाद एक छिड़काव अवश्य करें।

समस्या– मैं फ्रेंचबीन लगाना चाहता हूं कृपया तकनीकी बतलायें।

– सुधीर शर्मा

समाधान– फ्रेन्चबीन जिसे राजमा भी कहते हैं खरीफ के अलावा रबी में भी लगाया जा सकता है आपका परिचय उत्पादन के प्रमुख बिंदुओं से –

- जातियों में अर्का कोमल, पंत अनुपमा,पंतबीन 2 आदि किस्में रबी मौसम के लिये उपयुक्त हैं।
- यद्यपि इसकी बुआई अक्टूबर में ही की जानी चाहिए फिर भी आप अभी लगा सकते हैं।
- वास्तव में यह फलीदार फसल है फिर भी इसको नत्रजन की आवश्यकता होती है।
- 260 किलो यूरिया, 375 किलो सिंगल सुपर फास्फेट तथा 33 किलो पोटाश/हे. डालें।
- पंक्ति से पंक्ति की दूरी 35 से 40 से.मी. तथा पौध से पौध 10 से.मी.की दूरी रखें।
- बीज 5–7 से .मी. गहराई पर डालें।
- फली 50 से 60 दिनों में उपलब्ध हो जाती है।

समस्या– अरहर की फसल में फूल आने लगे हैं कृपया इल्ली की रोकथाम के उपाय बतलायें।

– जयप्रकाश चौरे

समाधान – आपका प्रश्न सामयिक है वर्तमान में अरहर में फूल आने लगे हैं कहीं –कहीं तो इतने पीले फूल दिखते हैं कि पौधा का हरापन दब जाता है। इसके बाद फली बनना शुरू होगा। इस अवस्था में फसल को बरबाद करने के लिये फली छेदक भी तैयारी कर रहा है। कीट की क्रियाशीलता पर सक्रिय पन रखना जरूरी है। अन्यथा 12 महीने की मेहनत से पाली –पोसी फसल खत्म हो जायेगी। रोकथाम के लिये निम्न उपाय करें।

- पॉड बोरर के नियंत्रण के लिए इमामेक्टिन बेंजोएट 5 प्रतिशत एसजी का प्रयोग करें।

निवेदन

समस्या-समाधान स्तंभ में पाठकों से निवेदन है कि अपनी खेती-किसानी संबंधी समस्या कृषि विशेषज्ञों से निराकरण करने हेतु वाट्सएप पर भेजें. एक बार में केवल एक प्रमुख समस्या ही वाट्सएप पर लिखकर भेजें. वाट्सएप हेल्पलाइन नं. 6262166222.

समस्या-समाधान

कृषक जगत 14, इंदिरा प्रेस काम्प्लेक्स, महाराणा प्रताप नगर, भोपाल (म.प्र.)

फोन-0755-4248100,2554864

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

कृषि रसायन ने तीन नए कीटनाशक लांच किए

जबलपुर में डीलर्स मीटिंग सम्पन्न

इंदौर (कृषक जगत)। देश की प्रसिद्ध कम्पनी कृषि रसायन एक्सपोर्ट्स प्रा. लि. द्वारा गत दिनों जबलपुर में डीलर्स मीटिंग का आयोजन किया गया, जिसमें कंपनी के जनरल मैनेजर श्री अजय पाटिल, सीनियर रीजनल मैनेजर श्री शैलेंद्र तिवारी, मार्केटिंग मैनेजर श्री संदेश पचौरी के अलावा बालाघाट, सतना और छिंदवाड़ा के 90 से ज्यादा डीलर्स उपस्थित हुए। इस मौके पर कम्पनी द्वारा तीन नए कीटनाशकों - क्रि नोवल, मकेरा और क्रिस्पिन को लांच किया गया।

श्री पाटिल ने कम्पनी उत्पादों एवं अन्य योजनाओं पर डीलरों को गहन मार्गदर्शन प्रदान किया। नए और मौजूदा उत्पादों की प्रस्तुति श्री पचौरी द्वारा दी गई। मुख्य आकर्षणों में गत वर्ष के सफल लॉन्च उत्पाद क्रिफोस गोल्ड, कोक्सी 55, की शील्ड, क्रिकलमैक्स, सबके पसंदीदा उत्पाद पोषक सुपरस्टार और के-मैक्स पर विस्तृत चर्चा शामिल थी। इसके अलावा कंपनी के प्रमुख और विश्वसनीय उत्पाद पोषक सुपर स्टार और के-मैक्स की उपयोगिता और प्रभावशीलता पर भी प्रकाश डाला गया। डीलर मीटिंग में कार्यक्रम के समापन पर कम्पनी द्वारा कृषज के तीन नए कीटनाशकों - क्रि नोवल, मकेरा और क्रिस्पिन को लांच किया गया। जो कृषकों के लिए एक उपलब्धि और डीलरों के साथ संबंधों को और मजबूती प्रदान करता है। आरम्भ में स्वागत भाषण श्री तिवारी ने दिया। कार्यक्रम का संचालन सेल्स ऑफिसर जबलपुर श्री ओम प्रकाश पटेल ने किया।

ग्रोमोर नैनो डीएपी की सागर जिले में पैनल चर्चा संपन्न

इंदौर (कृषक जगत)। देश की प्रसिद्ध कंपनी कोरोमंडल इंटरनेशनल लि. द्वारा गत दिनों सागर जिले में ग्रोमोर नैनो डीएपी पर एक पैनल चर्चा का आयोजन किया गया, जिसमें कंपनी के जोनल मैनेजर भोपाल ज़ोन श्री सूर्यकांत त्रिपाठी, मार्केटिंग ऑफिसर श्री मोहित यादव, संभागीय कृषि विज्ञानी श्री अमित मिश्रा के अलावा प्रमुख प्रतिभागी डीडीए श्री राजेश त्रिपाठी, डॉ. के. एस. यादव, प्रधान वैज्ञानिक, डॉ. आशीष कुमार त्रिपाठी, वैज्ञानिक, केवीके सागर, सागर जिले के 25 आरएईओ और एसएडीओ, प्रगतिशील किसान श्री पूरन नायक, श्री सोनू बंजारा सहित विभिन्न ब्लॉकों के 65 से अधिक प्रगतिशील किसान, 3 प्रमुख डीलर, 10 प्रमुख खुदरा विक्रेता के अलावा कृषि समुदाय की उत्कृष्ट भागीदारी रही।

कार्यक्रम के आरम्भ में श्री यादव ने विषय संबंधित चर्चा की। श्री मिश्रा ने विचारोत्तेजक सत्र में ग्रोमोर नैनो डीएपी तकनीक पर चर्चा की। जबकि श्री त्रिपाठी ने उपयोगकर्ता किसानों के बीच ग्रोमोर नैनो डीएपी के बारे में अपने अनुभव साझा किए। चर्चा का मुख्य विषय चालू रबी सीजन में गेहूं, चना, मसूर, सब्जियों और अन्य फसलों के लिए नैनो डीएपी को अपनाना था। यह एक अत्यंत महत्वपूर्ण संवाद सत्र साबित हुआ, जहां किसानों के प्रश्नों का समाधान कर उनकी गलतफहमियों को दूर किया और नैनो डीएपी फसलों के प्रदर्शन और उपज को कैसे बढ़ा सकता है, इस पर जानकारी साझा की गई। इस पैनल चर्चा में कोरोमंडल कम्पनी के कृषि वैज्ञानिक श्री मुकेश कुमार बिड़ला,एमडीटी श्री राहुल पाटीदार,श्री सिद्धार्थ चौबे और श्री दीपक सेन अन्य प्रतिभागी के रूप में शामिल हुए।

चार निजी उर्वरक विक्रेताओं के लायसेंस निलंबित

शाजापुर। कृषि उपसंचालक श्री आरएल जामरे ने ई-टोकन उर्वरक प्रणाली का पालन नहीं करने एवं उर्वरक वितरण में अनियमितता करने पर जिले के चार निजी उर्वरक विक्रेताओं के फुटकर उर्वरक प्राधिकार पत्र तत्काल प्रभाव से निलंबित किये जाकर समस्त प्रकार के उर्वरक विक्रय पर प्रतिबंध लगाया गया है। जिसमें पायल फर्टिलाइजर्स टंकी चौराहा शाजापुर, प्रगत कंस्ट्रक्शन प्राइवेट लि. ए.बी. रोड शाजापुर, न्यू अमर कृषि सेवा केन्द्र धोबी चौराहा एवं भारत बीज भंडार बेरछा मंडी शामिल हैं।

उल्लेखनीय है कि मप्र कृषि विकास विभाग द्वारा 01 अक्टूबर 2025 से जिले में ई-टोकन उर्वरक प्रणाली लागू की गई है, जिसके बारे में विभाग द्वारा समय-समय पर समस्त उर्वरक विक्रेताओं की बैठक की जाकर एवं व्ही.सी. के द्वारा शासन की नीति निर्देशकों के बारे में अवगत कराने के उपरांत भी फर्मों द्वारा शासन की ई-टोकन उर्वरक प्रणाली का पालन नहीं करने एवं उर्वरक वितरण में अनियमितता करने पर चेतवनी पत्र जारी किये जाने के पश्चात भी संबंधित फर्मों के नाम का ई-टोकन होने के उपरांत भी किसानों को उर्वरक नहीं दिए गये एवं उर्वरक नियंत्रण आदेश 1985 का उल्लंघन किया जा रहा था।

एक दिवसीय डी.पी.आई.आई.टी. पंजीकृत इंक्यूबिटी कार्यशाला में

कृषि उद्यमिता एवं नवाचार तकनीकको प्रोत्साहन

ग्वालियर। राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय ग्वालियर के सेंटर फॉर एग्रीबिजनेस इन्क्यूबेशन एंड इंटरप्रेन्योरशिप द्वारा एक दिवसीय डी.पी.आई.आई.टी. पंजीकृत इंक्यूबिटी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उदेद्श्य डी.पी.आई.आई. टी. पंजीकृत इंक्यूबिटी को कृषि उद्यमिता एवं उसके संबंधित क्षेत्रों में नवाचार तकनीकी समाधान एवं सतत विकास को प्रोत्साहित करना है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि निदेशक विस्तार सेवाएं डॉ. वाय.पी. सिंह ने कृषि में जैविक उत्पादों की गुणवत्ता पर विचार व्यक्त किये।

कार्यशाला की शुरूआत में डी.पी.आई.आई.टी. पंजीकृत संस्था ओमकार इंडिया प्रा.लि. के संचालक डॉ हरिशंकर गोस्वामी द्वारा बताया गया कि उनके उत्पाद ज्यादातर ऑनलाइन प्लेटफार्म के माध्यम से ज्यादा मात्रा में बिकते है जिससे ज्यादा लाभ प्राप्त किया जाता है।

कार्यशाला में क्रमशः डी.पी.आई.आई.टी. पंजीकृत संस्था एनटीजी इंफोटेक प्रा.लि. के संचालक श्री सुमेश नायर द्वारा बताया गया कि सीएआईई के साथ 2 साल से जुड़कर काम कर रहे हैं। क्रमशः डी.पी.आई. आई. टी. पंजीकृत संस्था ईकोनेस्टियॉ प्रा.लि. के संचालक दिलीप सिंह गुर्जर जो कि जनवरी 2025 से सीएआईई के सहयोग से किचन गार्डनिंग के क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं। उन्होंने आगामी सहयोग के लिये एप डिजायन करने जोमाटो, स्विगी कांसेप्ट आधारित व्यापार करने के लिये प्रयासरत् है। क्रमशः विशुद्धा फार्म एग्रोटेक प्रा.लि. के संचालक श्री अनुज अग्रवाल जो कि सीएआईई के साथ 2023 से जुड़कर कार्य कर रहे हैं।

78 वर्ष
कृषक जगत
राष्ट्रीय कृषि अखबार
भोपाल-जयपुर-रायपुर

वर्ष में कई आकर्षक एवं संग्रहणीय विशेषांक
- खरीफ विशेषांक
- पौध संरक्षण विशेषांक
- रबी विशेषांक
- बीज विशेषांक
- बागवानी विशेषांक

25 लाख पाठक

कृषक जगत की सदस्यता राशि
⇨ वार्षिक रु. 600/- ⇨ दो वर्ष रु. 1000/-
⇨ तीन वर्ष रु. 1500/-

डाक से नियमित रूप से 'कृषक जगत' - प्रति सप्ताह ☐ भोपाल ☐ जयपुर ☐ रायपुर संस्करण निम्न पते पर एक वर्ष/दो वर्ष / तीन वर्ष भेजें. (अपनी आवश्यकता के अनुरूप निशान लगायें).

नाम ....

ग्राम .... पो. ....

डाक वितरण हेतु अपने क्षेत्रीय पोस्टमैन का मो. नं. अवश्य दें : ....

वि.ख. .... तह. ....

जिला .... पिन ☐☐☐☐☐☐ राज्य ....

शिक्षा .... भूमि .... उम्र ....

ट्रैक्टर/मॉडल .... फोन/मो. ....

ई-मेल ....

मेरा सदस्यता शुल्क रुपये .... नगद/डिमांड ड्राफ्ट/UPI/Bank/

मनीऑर्डर/क्र. .... 'कृषक जगत' भोपाल के नाम संलग्न है।

कृषक जगत में सदस्यता लेने के माध्यम
कृषक जगत ऑनलाइन पेमेंट लिंक
http://www.krishakjagat.org/krishak-jagat-subscription/index.php

Online Payment- SBI-A/C No. 53007193070, IFSC : SBIN 0005793,
Google Pay/Phone Pe/PAYTM/UPI : Mobile 9826255861

कृषक जगत हेल्पलाइन नम्बर 6262166222

पेमेंट के बाद : 1. पेमेंट का स्क्रीनशॉट भेजें इस फोन नम्बर पर 9826255861
2. पूरा नाम, पता पिन कोड के साथ भेजें।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
प्रसार प्रबंधक कृषक जगत

भोपाल : 14, इंदिरा प्रेस काम्पलेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल-462011 फोन: 0755-4248100, मो. : 9926653355, 9826255861, E-mail-info@krishakjagat.org
जयपुर : एच-64, मीरा मार्ग, बनी पार्क, जयपुर (राज.), मो. : 9829254092, 7387422952
रायपुर : एलआईजी-5, सेक्टर-2, शंकर नगर, रायपुर (छ.ग.),मो.: 9826255862
इंदौर : 331-332, आर्बिट माल, ए.बी. रोड, विजय नगर चौराहे के पास इंदौर, मो. : 9826021837, 9826024864
नई दिल्ली : 403,आईएनएस बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली, मो. : 7387422952

सदस्यता शुल्क भुगतान के लिए QR कोड स्कैन करें

जैन इरिगेशन को निर्यात में प्लेक्स काउंसिल से मिले आठ पुरस्कार

मुंबई/जलगांव (कृषक जगत)। पाइप, ड्रिप सिंचाई आदि के माध्यम से जल संरक्षण के माध्यम से कृषि क्षेत्र में समृद्धि लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली विश्व प्रसिद्ध कंपनी जैन इरिगेशन सिस्टम्स लि. को प्लास्टिक उत्पादों के विभिन्न समूहों में दो वर्षों 2023-24 और 2024-25 के लिए आठ निर्यात पुरस्कार प्रदान किए गए। यह समारोह भारतीय प्लास्टिक उद्योग में उत्कृष्टता के 70 वर्षों का जश्न मनाते हुए उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वालों को सम्मानित करने के लिए आयोजित किया गया था। पीएलएक्स काउंसिल प्लेटिनम जुबली समारोह और निर्यात उत्कृष्टता पुरस्कार समारोह में वरिष्ठ उद्योगपति श्री एम. पी. तापड़िया, विधानसभा अध्यक्ष श्री राहुल सुरेश नार्वेकर, श्री रवीश कामत, पीएलएक्स काउंसिल के अध्यक्ष श्री विक्रम बधोरिया, उपाध्यक्ष श्री सचिन शाह, श्री हेमंत मेनोचा, श्री श्रीभाष दशमोहपात्रा उपस्थित थे।

मुंबई में हुए इस पुरस्कार समारोह में प्लास्टिक निर्यात संवर्धन परिषद (प्लेक्स काउंसिल) द्वारा दिए गए इस पुरस्कार में जैन इरिगेशन ने हैट्रिक बनाई है। केंद्रीय वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल से कंपनी की ओर से उपाध्यक्ष श्री अनिल जैन और वरिष्ठ सहयोगियों डॉ. अनिल पाटिल, वी. एम. भट, डॉ. बालकृष्ण यादव, श्री राजेंद्र महाजन, श्री एस. एन. पाटिल, श्री के. बी. सोनार, सुचिता केरावंत, दीपा शिवड़े के साथ यह पुरस्कार प्राप्त किया।

जैन इरिगेशन कंपनी को वर्ष 2023-24 और 2024-25 के लिए पाइप्स और होसेस (प्लास्टिक) फिटिंग श्रेणी में निर्यात उत्कृष्टता पुरस्कार के लिए चुना गया है। इसमें जैन को 2023-24 के लिए ड्रिप इरिगेशन सेक्शन में निर्यात के लिए प्रथम पुरस्कार, फिटिंग पाइप होसेस सेक्शन में द्वितीय पुरस्कार, पाइप होसेस सेक्शन में प्रथम पुरस्कार और निर्यात के लिए पीवीसी फोम शीट सेक्शन में प्रथम पुरस्कार मिला। जबकि 2024-25 के लिए कंपनी को ड्रिप इरिगेशन में प्रथम पुरस्कार, फिटिंग पाइप और होसेस सेक्शन में द्वितीय पुरस्कार, पाइप होसेस सेक्शन में उत्कृष्ट निर्यात के लिए द्वितीय पुरस्कार और पीवीसी फोम शीट सेक्शन में प्रथम पुरस्कार मिला।

इस अवसर पर मुंबई कार्यालय से एकनाथ महाकाल, किसान वेयर, शिवा तुपे ने पुरस्कार समारोह का संचालन किया। श्री विक्रम बधोरिया ने स्वागत भाषण दिया। इस अवसर पर प्रमुख गणमान्यों सहित राहुल नार्वेकर ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

चना, मटर-आलू फसल के लिए लाभकारी - बूम फ्लावर

इंदौर (कृषक जगत)। देश की प्रतिष्ठित कम्पनी देवी क्रॉप साइंस प्रा. लि. का उत्पाद बूम फ्लावर रबी फसलों में खासतौर से चना, मटर और आलू की फसल के लिए बहुत लाभकारी है। वस्तुत: बूम फ्लावर एक पादप वृद्धि प्रवर्तक है, जो फसल की पैदावार बढ़ाने में मदद करता है। बूम फ्लावर के इस्तेमाल से पौध विकास को एक नया आयाम मिलता है और अच्छी उपज प्राप्त होती है।

कंपनी के वाइस प्रेसिडेंट (मार्केटिंग) श्री एस.पी. देशमुख ने देवी क्रॉपसाइंस कम्पनी के प्रमुख उत्पाद बूम फ्लावर की विशेषताओं और इससे होने वाले फायदों पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए बताया कि बूम फ्लावर में नाइट्रोबेंजीन 20 प्रतिशत ई डब्ल्यू होता है। यह पौधों के विकास के साथ ही अति उत्तम फुल उत्तेजक, शक्तिवर्धक और उपजवर्धक उत्पाद है, जो पिछले दो दशकों से देश और विदेश में नंबर एक विश्वसनीय ब्रांड के रूप में स्थापित है। देवी क्रॉपसाइंस पहली ऐसी एग्रो केमिकल कम्पनी है, जिसके बूम फ्लावर उत्पाद को भारत में पीजीआर के रूप में पंजीकृत किया गया है। कंपनी देश के 18 राज्यों और दुनिया के 22 देशों में इसका विक्रय कर रही है इसके अलावा कंपनी के पास बायो स्टीमुलेंट और बायो फर्टिलाइजर की भी विस्तृत श्रृंखला है।

विशेषताएं - देवी क्रॉपसाइंस का बूम फ्लावर एक पादप वृद्धि प्रवर्तक है जो फसल की पैदावार बढ़ाने में मदद करता है। यह पौधों के विकास, फूल आने और फल लगने की प्रक्रिया को बेहतर बनाता है। इसके मुख्य उपयोगों में शुरुआती चरणों में जड़ों और शाखाओं का विकास करना और पुष्प चरण में फूलों की संख्या बढ़ाना शामिल है।

चना, आलू और मटर में बूम फ्लावर के लाभ - प्रारंभिक चरण में इसका छिड़काव करने से जड़ों का तेजी से विकास होता है और शाखाओं की संख्या बढ़ती है।यह फूलों की संख्या को बढ़ाता है, जिससे अच्छी उपज मिलती है। यह पौधों द्वारा पोषक तत्वों के अवशोषण में सुधार करता है। यह पौधों को महत्वपूर्ण चरणों में ऊर्जा प्रदान करता है। यह प्रचुर मात्रा में फूल आने को प्रेरित करता है और फूल, कलियों और फलों को समय से पहले गिरने से रोकता है। सही समय पर उपयोग करने से उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि होती है और उपज की गुणवत्ता में सुधार होता है। यह जड़ के विकास को बढ़ावा देता है और पौधों को बेहतर ढंग से मिट्टी में जड़ जमाने में मदद करता है। बूम फ्लावर पोषक तत्वों के अवशोषण और उपयोग दक्षता में सुधार करता है, जिससे पौधा मजबूत बनता है।

उपयोग की विधि - बूम फ्लावर को 2 से 3 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी की दर से इस्तेमाल करने की सलाह दी जाती है। छिड़काव की मात्रा फसल के पत्ती क्षेत्र, अवस्था और फसल की प्रकृति पर निर्भर करती है। सर्वोत्तम परिणामों के लिए फसल की सही वृद्धि अवस्था में इसका प्रयोग अत्यंत महत्वपूर्ण है। आमतौर पर, फसल की अवधि के आधार पर मौसमी फसलों पर 3 से 4 छिड़काव की सलाह दी जाती है। **अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें - 9425448840**

जनेकृविवि में कृषि आर्थिक, व्यय योजना की बैठक

जबलपुर। कृषि आर्थिक अनुसंधान केंद्र जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर की सलाहकार समिति की वार्षिक बैठक एवं कृषि व्यय अध्ययन योजना मप्र अंतर्गत निगरानी समिति की बैठक का आयोजन श्री देवाजीत खोण्ड, प्रमुख आर्थिकी सलाहकार, कृषि मंत्रालय भारत सरकार, नई दिल्ली की उपस्थिति में एवं कुलपति डॉ. प्रमोद कुमार मिश्रा की अध्यक्षता में किया गया। बैठक में डॉ. दीपक राठी, संचालक (प्रभारी), श्री देवाजीत खोण्ड एवं कुलपति डॉ. पी.के मिश्रा द्वारा इन सभी बिंदुओं का समर्थन किया गया। डॉ. गौरव वानी, प्रक्षेत्राधिकारी, कृषि व्यय अध्ययन योजना द्वारा निगरानी समिति के समक्ष योजना की कार्य प्रणाली एवं वित्तीय मामलों को प्रस्तुत किया गया। इस अवसर पर डॉ. जी. के. कौतू,संचालक अनुसंधान सेवायें, डॉ. आर. एम. साहू, सदस्य, डॉ. एस. बी. नाहटकर, सदस्य श्रीमति संजू तिवारी लेखा नियंत्रक एवं डॉ. ए. के. जैन कुलसचिव डॉ. विजय यादव सदस्य एवं डॉ. रोशनी तिवारी उपस्थित रहे।

गेहूं फसल में लाभकारी महावीरा जिरोन पावर प्लस

इंदौर (कृषक जगत)। इन दिनों किसान रबी की फसलों गेहूं-चना आदि की बुवाई में व्यस्त हैं या की जा चुकी है। गेहूं, मप्र की प्रमुख फसल है, जिसे बड़े रकबे में बोया जाता है। राज्य में गेहूं की औसत उत्पादकता 20-25 क्विंटल/हेक्टेयर है,जो राष्ट्रीय उत्पादकता (30-40 क्विंटल/हे.) से पीछे है। इसका मुख्य कारण किसानों द्वारा असंतुलित मात्रा में उर्वरकों का उपयोग करना है। पोषक तत्व प्रबंधन की इस कमी को दूर करने के लिए देश की प्रमुख उर्वरक निर्माता कम्पनी आरएम फास्फेट्स एंड केमिकल्स प्रा. लि. (आरएमपीसीएल) का पोषक तत्व आधारित महावीरा जिरोन पॉवर प्लस ऐसा उत्पाद है, जिसमें 6 पोषक तत्वों-फास्फोरस, कैल्शियम, सल्फर, ज़िंक, मैग्नीशियम और बोरोन की मौजूदगी से गेहूं फसल में पोषण की पर्याप्त पूर्ति होने से गुणवत्तायुक्त फसल के साथ बेहतर उत्पादन मिलता है, जिसे देश के कई कृषि विश्वविद्यालयों एवं अनुसंधान केंद्रों ने प्रमाणित भी किया है। आरएमपीसीएल कम्पनी के सीनियर जीएम (हेड एग्रोनॉमिस्ट) श्री प्रमोद कुमार पांडेय ने महावीरा जिरोन पावर प्लस की विशेषताएं और गेहूं की फसल में पोषक तत्व प्रबंधन पर विस्तार से प्रकाश डाला।

महावीरा जिरोन पावर प्लस की विशेषताएं - श्री पांडेय ने बताया कि महावीरा जिरोन पॉवर प्लस 6 पोषक तत्वों- फास्फोरस, कैल्शियम , सल्फर, ज़िंक, मैग्नीशियम और बोरोन के मिश्रण वाला उत्पाद है, जो गेहूं फसल में पोषण की पर्याप्त पूर्ति करता है। इसमें फास्फोरस 16%, सल्फर 11%, कैल्शियम 19%, ज़िंक 0.5%, मैग्नीशियम 0.5% और बोरोन 0.20% होता है। इसमें मौजूद फास्फोरस से जहां

जड़ों का तेज़ी से विकास होता है, वहीं यह फूल/बालियों बनने से लेकर पकने तक में अहम भूमिका निभाता है। जबकि कैल्शियम जड़ों की वृद्धि के साथ पौधों की मज़बूती प्रदान करता है। बोरोन की उपस्थिति से पौधों के नए अंगों के निर्माण में मदद के अलावा गेहूं के दानों की चमक भी बढ़ती है। ज़िंक, बालियों के आकार एवं दानों की संख्या बढ़ाने में सहयोग करता है। यह पोटेशियम और कैल्शियम के अनुपात को नियंत्रित करता है, जिससे फूलों और बालियों का गिरना रुक जाता है, फलत: अच्छा उत्पादन मिलता है। ज़िंक, क्लोरोफिल निर्माण में सहायक होने के साथ ही प्रकाश संश्लेषण की प्रकिया को बढ़ाता है। वहीं, मैग्नीशियम पौधों को स्वस्थ और हरा रखता है। गेहूं की फसल में महावीरा जिरोन पावर प्लस का प्रयोग करने से गेहूं की चमक, गुणवत्ता बढ़ती है। उत्पादन अधिक होने से भंडारण क्षमता में भी वृद्धि होती है।

गेहूं फसल में पोषक तत्व प्रबंधन - श्री पांडेय ने बताया कि गेहूं की फसल में बुवाई के समय 150 किग्रा अर्थात् 3 बैग महावीरा जिरोन पावर प्लस के साथ 27 किग्रा म्यूरेट ऑफ पोटाश, 25 किग्रा यूरिया, 4 किग्रा सिमट्रॉन माइकोराइजा और 1 किग्रा फेरोची 17% एकड़ की दर से अवश्य डालें। बुवाई के 20 से 25 दिन बाद 35 किग्रा यूरिया, 250 मिली लीटर बलेको एनपीके 11:11:08 एवं 250 मिली लीटर जिंटाविक 39.5% प्रति एकड़ अवश्य दें। 50 से 55 दिन की फसल के दौरान 30 किग्रा यूरिया एवं 250 मिली लीटर एमिट्रॉन Z देने से गेहूं का गुणवत्तापूर्ण बेहतर उत्पादन लिया जा सकता है। गेहूं फसल की बढ़िया वृद्धि और अधिक कल्लों के लिए जल में घुलनशील उर्वरक का प्रयोग करने से अच्छे परिणाम मिलते हैं। 45 से 50 दिन की फसल में 12:61:00 का, 50 से 55 दिन में CN + B + 00:52:34 का तथा 80 से 85 दिन में 13:00:45 अथवा 00:00:50 का एक छिड़काव 4 से 5 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोलकर करें। इसके बेहतर नतीज़े मिलेंगे। **अधिक जानकारी के लिए कस्टमर केयर नंबर 8956926412 पर सम्पर्क करें।**

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

COP30 में यूपीएल की लो-मीथेन राइस परियोजना को मिला वैश्विक SBCOP अवॉर्ड

मुंबई (कृषक जगत)। सतत कृषि समाधानों की वैश्विक अग्रणी कंपनी यूपीएल को ब्राज़ील के बेलेम में आयोजित COP30 में फूड सिस्टम्स श्रेणी के तहत प्रतिष्ठित SBCOP अवॉर्ड मिला है। यह सम्मान UPL की लो-मीथेन राइस परियोजना को दिया गया, जिसका उद्देश्य उन्नत किस्मों और आधुनिक कृषि तकनीकों के माध्यम से धान खेती से होने वाले मीथेन उत्सर्जन को कम करना है। यह अवॉर्ड ब्राज़ील की नेशनल कन्फेडरेशन ऑफ इंडस्ट्री (CNI) द्वारा संचालित वैश्विक SBCOP कार्यक्रम का हिस्सा है, जो प्रभावशाली और विस्तार योग्य जलवायु समाधानों को पहचान देता है।

UPL समूह के चेयरमैन और ग्रुप CEO श्री जय श्रॉफ ने कहा, 'यह सम्मान हमारे लिए गर्व की बात है। लो-मीथेन राइस परियोजना किसानों को वैज्ञानिक और टिकाऊ तरीके अपनाने में मदद करती है, जिससे उत्पादकता बढ़ती है और धान खेती का पर्यावरणीय प्रभाव कम होता है। यह हमारी टिकाऊ और जलवायु-लचीली कृषि प्रणाली की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।'

यह परियोजना UPL की वैश्विक #AFarmerCan पहल से भी जुड़ी है, जो किसानों को बदलती जलवायु चुनौतियों से निपटने के लिए तकनीक, ज्ञान और बेहतर प्रथाएँ प्रदान करती है।

SBCOP के चेयरमैन रिकार्डो मुस्सा ने बताया कि 600 से अधिक संस्थानों और कंपनियों की 1,400 से अधिक परियोजनाओं में से 48 सर्वश्रेष्ठ पहलों का चयन किया गया, और UPL की परियोजना अपनी प्रभाव क्षमता और बड़े स्तर पर लागू किए जाने की योग्यता के कारण इनमें शामिल हुई। यह उपलब्धि सतत कृषि, कम उत्सर्जन और किसानों की दीर्घकालिक समृद्धि के प्रति UPL की प्रतिबद्धता को और मजबूत करती है।

रोग मुक्त फसल के लिए वीटावैक्स पॉवर से करें बीज उपचार

हरदा। मैं विजय खोपरे गाँव गहाल, तहसील व जिला हरदा का निवासी हूँ। मेरा मुख्य कार्य खेती है। मेरे पास कुल 20 एकड़ जमीन है। पिछले वर्ष मैंने 7 एकड़ में चना, 6 एकड़ में मक्का एवं लगभग 7 एकड़ में गेहूँ की बुआई की थी। इन बीजों को धानुका के विटावैक्स पावर से 2-3 ग्राम प्रति किलो की दर से उपचारित किया।

श्री खोपरे का कहना है कि विटावैक्स पावर से बीजोपचार करने पर सभी फसलों में बेहतरीन व एक समान अंकुरण क्षमता देखने को मिली। शुरूआती अवस्था में लगने वाले रोगों पर भी बेहतर नियंत्रण मिला। जड़ों का अच्छा विकास हुआ। गेहूं की फसल में फंगस भी नहीं लगा। मैं धानुका विटावैक्स पावर के परिणामों से संतुष्ट हूँ। अपने अनुभव के आधार पर मैं अन्य किसान भाईयों को भी धानुका के गुणवत्तायुक्त उत्पाद विटावैक्स पॉवर उपयोग करने की सलाह देता हूँ। अधिक जानकारी के लिए मेरे मो.: 98261-84340 पर संपर्क कर सकते हैं।

कृषक जगत की वार्षिक सदस्यता शुल्क मात्र 600 रूपये

एस्कॉर्ट्स कुबोटा ने धान के लिए आधुनिक राइस ट्रांसप्लांटर्स लॉन्च किए

फरीदाबाद (कृषक जगत)। एस्कॉर्ट्स कुबोटा लि. (EKL) ने कुबोटा ब्रांड के तहत अपने तीसरी पीढ़ी के राइड-ऑन राइस ट्रांसप्लांटर्स – KA6 और KA8 को भारत में पेश किया है। जापान में विकसित ये नए मॉडल उन्नत तकनीक और व्यावहारिक फील्ड उपयोगिता का संयोजन हैं, जो किसानों को अधिक उत्पादकता, बेहतर ऑपरेटर आराम और सटीक रोपाई प्रदान करते हैं। इन मॉडलों को देश के 7 राज्यों – तमिलनाडु, पंजाब, ओडिशा, मध्य प्रदेश, आंध्र प्रदेश, केरल और तेलंगाना में लॉन्च किया गया है, जहां धान की मशीनीकृत खेती की मांग लगातार बढ़ रही है।

एस्कॉर्ट्स कुबोटा लि. के मुख्य वित्तीय अधिकारी और निदेशक श्री भारत मदान ने कहा, 'एस्कॉर्ट्स कुबोटा में हम मशीनीकरण को किसानों को सशक्त बनाने और कृषि को अधिक कुशल व टिकाऊ बनाने का महत्वपूर्ण कदम मानते हैं। नई KA सीरीज़ के राइस ट्रांसप्लांटर्स इसी दिशा में एक बड़ा कदम हैं, जो आधुनिक तकनीक के साथ रोपाई प्रक्रिया को आसान बनाते हैं।'

एग्री सॉल्यूशंस बिज़नेस डिविजन के चीफ ऑफिसर श्री राजन चुघ ने कहा, 'इन मशीनों को खेत की वास्तविक चुनौतियों-मजदूरों की कमी, काम के लंबे घंटे और कठिन परिस्थितियों को ध्यान में रखकर बनाया गया है।'

फसलों की पैदावार बढ़ाए नैनो उर्वरक

मुरैना में इफको का एक दिवसीय प्रशिक्षण

मुरैना (कृषक जगत)। इफको ने जिले के कृषि अधिकारियों के लिए एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम में डॉ. जे. सी. गुप्ता प्रमुख कृषि विज्ञान केंद्र, श्री अनंत सरैया उपसंचालक कृषि, डॉ. दिनेश कुमार सोलंकी राज्य विपणन प्रबंधक इफको भोपाल प्रमुख रूप से उपस्थित थे।

आधुनिक नवीन टेक्नोलॉजी नैनो उर्वरकों के इफको द्वारा विकास एवं किसान हित में जमीन की उर्वराशक्ति बढ़ाने तथा फसलों की पैदावार बढ़ाने के लिए नैनो ताकनीकी से बने उर्वरकों के उपयोग करने की सलाह दी गई। कार्यक्रम में सर्वाधिक उपयोग करने वाले नैनो उर्वरकों से संतुष्ट किसानों के द्वारा भी अपने अनुभव प्रस्तुत किए गए। कार्यक्रम में डॉ. सोलंकी ने जैविक कार्बन बढ़ाने पर जोर दिया तथा नैनो उर्वरकों का उपयोग बढ़ाकर परंपरागत खादों की खपत घटाने की विधियों पर बताया। प्रशिक्षण का संचालन डॉ. बी. एस. जादौन, मुख्य क्षेत्र प्रबंधक, इफको द्वारा किया एवं सहयोग श्री प्रदीप शर्मा विक्रय अधिकारी इफको बाजार ने किया।

कैरा टेक्नोप्लास्ट प्रा.लि., खरगोन
आपकी समृद्धि हमारी प्राथमिकता
हमारे यहां पर ड्रिप में फ्लैट और राउण्ड एचडीपीई व स्प्रिंकलर पाईप, एचडीपीई क्वाइल, लपेटा पाईप एवं रेन पाईप वर्जिन एवं उच्च क्वालिटी में बनाये जाते हैं। **सम्पर्क** - निरंजन नगर, कसरावद रोड, खरगोन, मो. : 7880017028, 7880017021
मई 25

TerraGlebe Farmers Producer Company Limited
NIMADFRESH
यूरोप में मिर्च निर्यात (एक्सपोर्ट) करने वाला मध्यप्रदेश का पहला किसान उत्पादक संगठन बना 'टेराग्लेब'
अब उसी की तर्ज पर नाबार्ड से गठित FPO निमाड़फ्रेश FPO रसायन मुक्त मसाले का बना मैन्युफैक्चर
ODOP - मिर्च-खरगोन
निमाड़फ्रेश FPO (JV) हरिओम भुरे 8964087240
टेराग्लेब FPO बालकृष्ण पाटीदार 9575524408
जुलाई 26

भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त नर्सरी
ISO 9001 : 2015 सर्टिफाईड
किसान हाईटेक ग्रीनहाऊस नर्सरी
द्वारा पपीता, मिर्च, टमाटर, बैंगन, तरबूज, करेला, पत्तागोभी, फूलगोभी आदि सब्जी के पौधे टेबल स्टेण्ड के ऊपर रखकर तैयार किए जाते हैं
सम्पर्क : 9407361901, 9407361902, 9407361903
सहयोगी प्रतिष्ठान : बागवानी बाजार नर्सरी जहां पर फलदार, सजावटी व फारेस्टी पौधों की विस्तृत श्रृंखला उपलब्ध है। **संपर्क : मो. :** 9407853117, 9407853118, 9407853119, **नर्सरी स्थल : ग्राम-सिरलाय, तह.- बड़वाह 451115, जिला-खरगोन (म.प्र.)**
मार्च 25

मध्यभारत की सबसे बड़ी नर्सरी
तिरुपति ग्रीन हाऊस नर्सरी
देश का सबसे बड़ा पौध भंडार औषधीय, फलदार, सजावटी फूलों के पौधे, इनडोर, टिश्यूकल्चर, क्रीपर, बोन्साई, सक्यूलेन्ट्स, केक्टस, हैंगिंग प्लांट, वर्टीकल प्लांट, लकी बैंबू रेंज, फॉरेस्ट्री प्लांट एवं सब्जियों के पौधों की विस्तृत श्रृंखला में
: आपका स्वागत है :
सिरलाय (बड़वाह) मध्यप्रदेश
www. tirupatinursery.com
email : tirupatinursery@gmail.com
मो. : 9479457720/99/63/86/96/16/17/13/31/51
मार्च 2025

पटवारी एग्रो एजेन्सी
:: वितरक ::
◆ कलश सीड्स लि. ◆ बायोस्टेट इंडिया लि. ◆ बॉयर कॉप साइंस ◆ धानुका एग्रीटेक लि. ◆ एफ.एम.सी. इंडिया प्रा.लि. ◆ घरड़ा केमिकल्स लि. ◆ अतुल एग्रीटेक लि. ◆ रामा फॉस्फेट्स लि. ◆ जी.एन.एफ.सी. ◆ इंसेक्टीसाइड्स इंडिया लि. ◆ बीएएसएफ ◆ डयूपॉन्ट इंडिया लि. ◆ क्रिस्टल क्राप साइंस ◆ डाउएग्रो साइंसेस ◆ एग्री सर्च इंडिया ◆ मंशा इंडिया लि. ◆ स्वाल कार्पोरेशन लि. ◆ मेघमनी आर्गेनिक्स ◆ अदामा इंडिया लि.
17, विशाल टॉवर, इंदिरा काम्पलेक्स, नवलखा चौराहा, इन्दौर (म.प्र.)
फोन : 2403694, 2400412, मो. : 9425077083

कई प्रकार की फसलों के लिए एकमात्र स्वचलित गियर ड्राईव
वरदान
मल्टीक्रॉप पॉवर रीपर
वरदान एग्री सॉल्यूशन्स प्रा.लि.
63, पोलोग्राउण्ड, इन्दौर-452015 (म.प्र.) फोन: 0731-4970600, 6264916090.

छोटा विज्ञापन बड़ा लाभ
व्यक्तिगत क्लासीफाइड
विज्ञापन के लिए निर्धारित कैटेगरीज-
- बेचना/खरीदना- ट्रैक्टर, ट्राली, थ्रेशर, खेत, मकान, मोटरसाइकल, पशु, मोटर, जनरेटर आदि ▪ बीज ▪ औषधीय फसल
विज्ञापन दर - मात्र रु. 600/- प्रति संस्करण लगातार 4 सप्ताह तक ▪ अधिकतम 25 शब्द
- अतिरिक्त शब्द- 2 रु. प्रति शब्द, अधिकतम 40 शब्दों तक

डिस्प्ले क्लासीफाइड
विज्ञापन दर : रु. 800/- प्रति अंक, प्रति संस्करण जीएसटी 5%अतिरिक्त
साइज : फिक्स साइज- 8 × 5 = 40 वर्ग से.मी.
कैटेगरीज- बीज, कीटनाशक, जैविक खाद, ट्रेवल्स, तीर्थ यात्राएं, आवश्यकता, ऑटोमोबाइल पार्ट्स, कृषि सेवा केन्द्र, शिक्षण संस्थाएं, प्रशिक्षण, बारदाने, कोल्ड स्टोरेज, गोदाम, होस्टल, वित्तीय संस्थाएं, चिकित्सक, एग्री क्लीनिक आदि।

कृषक जगत
की सदस्यता एवं विज्ञापन के लिए हेल्पलाइन नं.
62 62 166 222
www.krishakjagat.org @krishakjagatindia
@krishakjagat @krishak_jagat

मध्यप्रदेश : औषधीय फसलों के उत्पादन में देश का अग्रणी राज्य

भोपाल (कृषक जगत)। मध्यप्रदेश औषधीय फसलों के उत्पादन में देश का सबसे अग्रणी राज्य बनकर उभरा है। राज्य में 46,837 हेक्टेयर क्षेत्र में औषधीय फसलों की खेती की जा रही है, जिसमें प्रमुख फसलें ईसबगोल, अश्वगंधा, सफेद मूसली, कोलियस और अन्य औषधीय पौधे शामिल हैं। 2024-25 में लगभग 1.24 लाख मीट्रिक टन औषधीय फसलों का उत्पादन हुआ है, जो राज्य में बढ़ती हुई कृषि विविधता और उभरते बाजार का संकेत है। मध्यप्रदेश में औषधीय फसलों की खेती एक नये दौर में प्रवेश कर चुकी है, जो न केवल किसानों की आय बढ़ाने में सहायक है, बल्कि ग्रामीण रोजगार के अवसर भी प्रदान कर रही है। राज्य सरकार के प्रयासों और प्रोत्साहन की वजह से मध्यप्रदेश जल्द ही औषधीय फसलों के उत्पादन में देशभर में और भी मजबूत स्थान बना रहा है।

आकर्षक कृषि क्षेत्र में वृद्धि

मध्यप्रदेश में औषधीय फसलों का क्षेत्र 2022-23 में 44,324 हेक्टेयर से बढ़कर 2024-25 में 46,837 हैक्टेयर हो गया है, जो लगभग 2,512 हेक्टेयर की वृद्धि को दर्शाता है। यह वृद्धि राज्य में औषधीय फसलों के प्रति किसानों का बढ़ता हुआ आकर्षण और उनकी बढ़ती हुई आय के संकेत है। इस दौरान उत्पादन में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। वर्ष 2021-22 में उत्पादन 1.17 लाख मीट्रिक टन था, जो 2024-25 में बढ़कर 1.24 लाख मीट्रिक टन हो गया।

औषधीय फसल उत्पादन में प्रमुख स्थान

भारत में औषधीय और सुगंधित फसलों के उत्पादन में मध्यप्रदेश की सबसे बड़ी हिस्सेदारी है। देशभर में उत्पादित औषधीय फसलों का लगभग 44 प्रतिशत हिस्सा मध्यप्रदेश से आता है। यह राज्य सरकार के किसानों को अनुदान, प्रोत्साहन और औषधीय पौधों की खेती के लिए दी जा रही सुविधाओं का परिणाम है।

सरकार की पहल और किसानों का समर्थन

राज्य सरकार औषधीय पौधों की खेती को बढ़ावा देने के लिए किसानों को 20 से 50 प्रतिशत तक का अनुदान प्रदान करती है। इसके साथ ही पारंपरिक फसलों के अलावा वाणिज्यिक औषधीय फसलों को बढ़ावा देने का प्रयास किया जा रहा है, ताकि किसानों को उनके उत्पाद का अच्छा मूल्य मिल सके। इसके परिणामस्वरूप ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के नए अवसर भी उत्पन्न हो रहे हैं।

प्रदेश में मुख्य औषधीय फसलें और उनका क्षेत्र

ईसबगोल	- 13,000 हेक्टेयर
अश्वगंधा	- 6,626 हेक्टेयर
सफेद मूसली	- 2,403 हेक्टेयर
कोलियस	- 974 हेक्टेयर
अन्य औषधीय फसलें	- 23,831 हेक्टेयर

कृषक जगत द्वारा प्रकाशित फसल पुस्तक श्रृंखला

जैविक खेती समृद्ध कृषक 60/- | भण्डारण के वैज्ञानिक तरीके 40/- | एकीकृत कीट प्रबंधन 60/- | मधुमक्खी पालन 60/- | जायद फसलें 60/- | सरसों 50/- | मसाला फसलें 70/- | सदाबहार खेती 90/- | चना 60 | मृदा उर्वरता मैनुअल 60/- | खेती के उन्नत तरीके (खरीफ फसल) 60/-

खेती के उन्नत तरीके (रबी फसलें) 60/- | सोयाबीन अनुसंधान तकनीक 70/- | बाजरा की वैज्ञानित खेती 50/- | रबी तिलहनी फसलें अलसी, कुसुम 60/- | मसूर, मटर एवं मोठ की उत्पादन तकनीक 60/- | लघु धान्य फसलों की उत्पादन तकनीक 50/- | कौशल विकास दिग्दर्शिका 60/- | गेहूं उत्पादन तकनीक 60/- | एकीकृत पौध पोषक तत्व प्रबंधन 60/- | पौध संरक्षण (खरीफ-रबी फसल सहित) 60/-

नाम .... ग्राम ....

पोस्ट .... तह. .... जिला ....

फोन/मोबा. .... कुल राशि ....

ऑर्डर की गई प्रतियों की संख्या/संलग्न ड्रॉफ्ट नं. ....

मनी ऑर्डर क्र. .... वी.पी. भेजें।

पांच पुस्तकें एक साथ खरीदने पर डाक खर्च अतिरिक्त

नोट : कृपया ड्राफ्ट या मनीआर्डर कृषक जगत भोपाल के नाम नीचे लिखे पते पर भेजें

प्रधान कार्यालय : 14, इंदिरा प्रेस काम्पलेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल-462011, फोन: 0755-4248100,2554864, मो. : 9826255861

इंदौर : 331-332, आर्बिट माल, ए.बी. रोड, विजय नगर चौराहे के पास इंदौर, मो. : 09826021837

मॉडल्स	तक का GST कटौती*	+	तक का अतिरिक्त लाभ*	=	तक के कुल लाभ*
Grand i10 NIOS Hy-CNG	₹71 480		₹75 000		₹1 46 480
EXTER Hy-CNG	₹81 721		₹70 000		₹1 51 721
AURA Hy-CNG	₹78 465		₹38 000		₹1 16 465

3 YEAR Unlimited** Kilometer Warranty

Up to 7 years extended warranty^^

कंपनी फिटेड CNG।
CSD और KPKB ग्राहकों के लिए अतिरिक्त लाभ##।

6 hai toh safe hai
6 airbags standard

Scan to chat with us or give a missed call at 9555295868

HYUNDAI

For Information Contact: Toll Free: 1800114645 **MP: Bhopal:** CI Hyundai, Jinsi, Ph: 8827244444 Koh-e-fiza, Ph: 9981996165 Vidisha, Ph: 9981996184 Ganj Basoda, Ph: 9425301405, CI Hyundai, Near D-Mart, Ph: 7470777222, Bareli, Ph: 9109977347, Surjeet Hyundai, J.K Road, Ph: 9111111713, Sehore DBU Ph: 9111111713 Raisen, Ph: 9111111713 Surjeet Hyundai, Chunabhatti, Near Shahpura Ph: 9111111713, **Gwalior:** ASM Hyundai, Shivpuri Link Road, Ph: 9926188224, 9926186417, Padav, Ph: 9926186401, 9926186402, 9926186403, Bhind, Ph: 9926186416, Badnagar, Ph: 9516000706, Badnawar, Ph: 9109133046, **Indore:** Harsh Hyundai, Ph: 9669696171/72/73, Bhawarkua, Ph: 6262222310/1/2, Sanwer, Ph: 9977051505, Surjeet Hyundai, Ph: 9111111713, Prince Hyundai, Ph: 9111104400, Dhar, Ph: 9575301757 Pipliyahana, Ph: 8893999505, Mhow, Ph: 6266331435 Kukshi, Ph: 9516000730 **Jabalpur:** Anmol Hyundai, Ph: 9111102091 Mandla, Ph: 9111021089 Dindori, Ph: 9111021088 Gadarwara Ph: 9174007844, Prestige Hyundai, Ph: 9826907601 Narsinghpur, Ph: 9826907601 Sihora, Ph: 9826907601, Katni, Ph: 9826907601, **Ujjain:** Prince Hyundai, Ph: 7747947947, Agar Ph: 9575300871, Nagda Ph: 7024109023, Badnagar, Ph: 9516000706, Badnawar Ph: 9109133046, **Hoshangabad:** Punyashila Hyundai, Ph: 9171114415 Harda, Ph: 9171114430, Pipariya, Ph: 9171114419.

Hyundai Click to Buy
Scan here

my Hyundai app

Hyundai Promise
Certified Pre-Owned Car

*Terms & conditions apply. *Offers and benefits mentioned are valid till 30th November 2025. Offers and benefits mentioned include cash, corporate, either exchange or scrappage benefits as applicable. Offers and benefits may vary from variant to variant and city to city. ^EMI may differ basis the bank interest, tenure, customer profile, etc. Finance at the sole discretion of financier. HMIL reserves the right to alter or discontinue the deals, benefits or offers at its sole discretion at any time. For more details, visit your nearest Hyundai showroom. **3-year warranty or upto 100 000 km whichever is earlier for Grand i10 NIOS, AURA, i20 & i20 N Line. 3-year unlimited km warranty is applicable for EXTER, VENUE, VENUE N Line, CRETA, CRETA N Line, ALCAZAR, TUCSON, VERNA and IONIQ 5. ^^Up to 7 Years extended warranty is now available for all variants (Petrol/Diesel/CNG) except EV cars and subject to payment. Scrappage bonus will be applicable against a valid certificate of deposit (issued by government approved and operational scrappage center) and exchange of old car. In case the customer is giving certificate of deposit but not physically exchanging his old car and buying a new car – then only scrappage bonus of ₹5 000 will be paid. This advertisement and car shown here is for creative representation purposes only and the depictions are for illustrative purposes. Features and specifications shown may or may not be part of standard fitment and are subject to change without prior notice. Hyundai Motor India Limited reserves the right to change specifications, colour, equipment, and schemes at any time without prior notice. The black shade on glass is due to lighting effect. Size and colour may appear to vary due to lighting and position effect. ##CSD: Canteen Stores Department, KPKB: Kendriya Police Kalyan Bhandar.